CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय संस्करण

घुघूति बासूति

उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीत

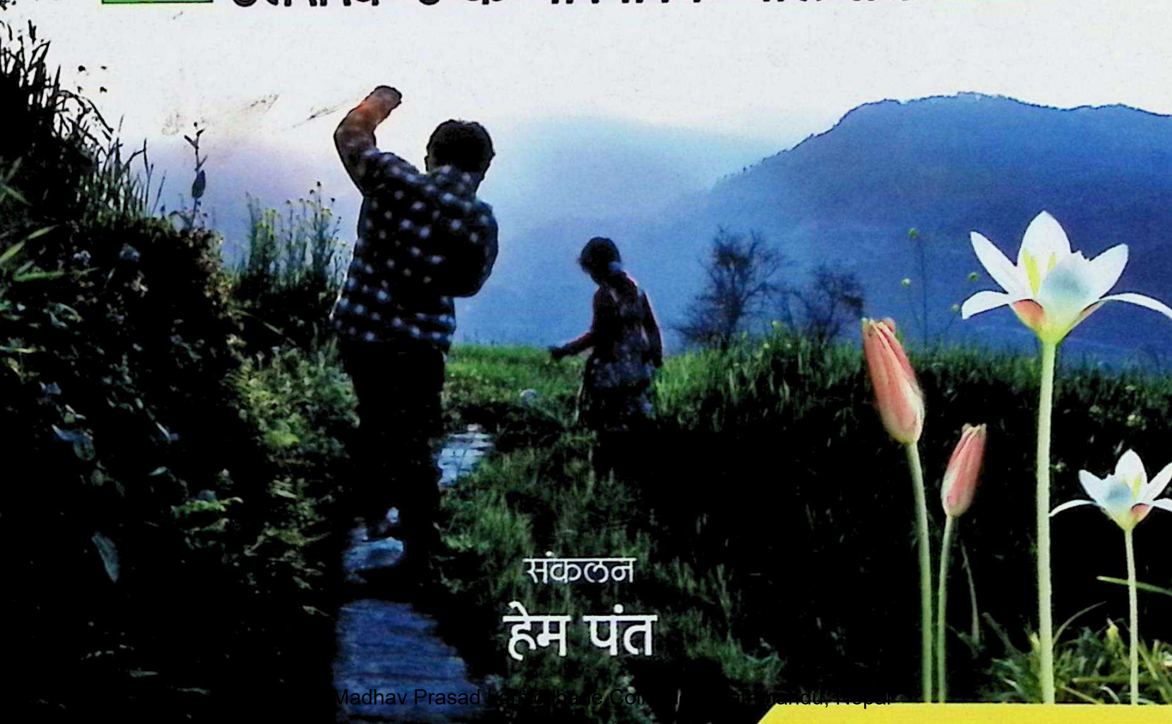

संकलन

हेम पंत

Madhav Prasad ... Collection, ... Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घुघूति बासूति

उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीत

संकलन

हेम पंत

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

© हेम पंत

ISBN : 978-93-90743-03-2

प्रकाशक एवं मुद्रक

समय साक्ष्य

15 फालतू लाइन, देहरादून-248001

दूरभाष: 0135-2658894

email: mailssdun@gmail.com

web: samaysakshay.com

संस्करण

प्रथम, 2022

द्वितीय, 2022

तृतीय, 2022

चित्र

मिनाक्षी, वसुधा, वत्सल, अवनी

कवर डिजाइन

विनोद सिंह गड़िया

कवर फोटो

अजय कन्याल

₹ 140/-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

युवा संस्कृतिकर्मी एवं रचनाकार हेम पंत द्वारा संकलित व सम्पादित उत्तराखण्ड की दुधबोलि आधारित बाल गीतों का संग्रह 'घुघूति-बासूति' पढ़ने को मिला। दादा-दादी, नाना-नानी, बड़े भाई-बहिनों के मुँह से प्रस्फुटित स्नेहिल बालगीतों ने इस संकलन के माध्यम से कई संदेशों को हमारे सामने रखा है। ये परंपरागत बालगीत हमारी सुदृढ़ पारपंरिक दुधबोली के प्रोत्साहन का माध्यम बनेंगे। बच्चों के लाड़-प्यार, संवादों के माध्यम से बच्चों में संस्कार, ज्ञान व जीवन कौशल की सीख, लघु लोक कथाओं से परिचय, ऋतु एवं पर्वो का परिचय, जानवरों की बोलियां, वनस्पतियों एवं जीव जन्तुओं का परिचय, कृषि, बागवानी, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, सम्बोधन एवं अभिव्यक्ति कौशल, लोक जीवन के क्रियाकलाप एवं ऐसे ही कई आयामों को बालगीतों के माध्यम से 'घुघूति-बासूति' में दिया गया है।

'घुघूति-बासूति' को पढ़ने पर जीवन के प्रथम सोपान में ही बच्चों में ढेर सारा ज्ञान व कौशल आनंदमय तरीके से स्वत: संचरित एवं संचयित हो जाता है। 'आणा-भ्वीणा' के माध्यम से बच्चों में तर्क शक्ति के अंकुर प्रस्फुटित होते दिखते हैं। सबसे बड़ी बात है कि पुस्तक जिस उद्देश्य से तैयार की गई है उससे भाषायी अभिप्रेरण एवं संरक्षण के संस्कार तो पैदा होते ही हैं, उनमें पुस्तकीय ज्ञान से इतर भी बच्चों के लिए एक बहुत बड़े ज्ञान भंडार के द्वार खुलते दिखते हैं। बाल उंगलियों से उकेरे गए चित्र, उनकी संकल्पना एवं प्रस्तुति ने पुस्तक को बहुत आकर्षक बना दिया है।

नई शिक्षा नीति-2020 में निहित दुधबोली एवं व्यावहारिक शिक्षा के प्रोत्साहन की अवधारणा पर 'घुघूति-बासूति' उत्तराखण्ड के बच्चों के लिए एक पथ प्रदर्शक साबित हो रही है। इसे राज्य के समस्त प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालयों तक पहुँचाने हेतु हम सबको प्रयास करने होंगे ताकि लोकभाषा के संरक्षण के प्रयासों के साथ-साथ रुचिकर ढंग से बाल मस्तिष्क को असीम ज्ञान से ओतप्रोत किया जा सके। 'क्रियेटिव उत्तराखण्ड' के संस्थापक हेम पन्त द्वारा किया गया यह प्रयास नि:संदेह स्वागतयोग्य ही नहीं अनुकरणीय भी है। इतने कम समय में 'घुघूति-बासूति' का तीसरा परिवर्धित एवं परिमार्जित संस्करण आपके हाथ में है। नव संस्करण हेतु मेरी असीम शुभकामनाऐं।

डॉ. अशोक कुमार पंत

चेयरमैन, मानस कॉलेज ऑफ साइंस,

टैक्नॉलॉजी एण्ड मैनेजमेंट

पिथौरागढ़

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी बात

'घुघूति बासूति – उत्तराखंड के पारंपरिक बालगीत' संकलन को मिले स्नेह के लिए सभी पाठकों का कोटिशः धन्यवाद। इस पुस्तक के दो संस्करण आते ही समाप्त भी हो गए थे, तीसरा संस्करण आपके हाथों में है। 'घुघूति बासूति' देश के हर शहर और अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया व सिंगापुर आदि देशों के प्रवासी उत्तराखंडी बच्चों तक पहुंची और हमें हर पाठक से उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रिया भी मिली। हमने पूरे उत्तराखंड की स्थानीय बोली-भाषाओं के बालगीतों को एक साथ प्रस्तुत किया, इस प्रयोग को बहुत सराहा गया। जनवरी 2022 में प्रकाशित होते ही 'घुघूति बासूति' उत्तराखंड की स्थानीय बोली-भाषा की सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों में शामिल हो गई।

कई विद्यालयों ने 'घुघूति बासूति' संकलन को अपने पाठ्यक्रम तथा स्कूली गतिविधियों का हिस्सा बनाया, यह सबसे संतोषजनक बात रही। पुस्तक में संकलित परंपरागत बालगीत बच्चों को उनके परिवेश, तीज-त्यौहार, सामाजिक ढाँचे और पर्यावरण को समझने में मददगार साबित हुए। साथ ही अभिभावकों ने भी इस रचनात्मक पहल की बहुत सराहना की। शिक्षा के कई जानकार लोगों ने इस संकलन को 'नई शिक्षा नीति 2020' के अनुरूप प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव भी दिया।

इस तीसरे संस्करण में हमने कुछ और परंपरागत बालगीत शामिल किए हैं, गीतों के साथ बच्चों द्वारा बनाए गए कुछ नए मौलिक चित्र भी जोड़े गए हैं। आप सभी जागरूक पाठकों का आशीर्वाद इस संस्करण को भी मिलेगा, ऐसी उम्मीद है।

इस प्रयास को सफल बनाने के लिए मार्गदर्शन करने वाले सभी अग्रजों, सहयोगियों, पाठकों और विभिन्न माध्यमों से 'घुघूति बासूति' का प्रचार-प्रसार कर रहे साथियों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। उन सभी शिक्षकों और स्कूल प्रबंधन का भी आभारी हूं जिन्होंने इस संकलन को पाठयक्रम का हिस्सा बनाकर हमारी मेहनत को सार्थक किया।

उम्मीद है कि यह संस्करण भी नई पीढ़ी के बीच रचनात्मकता को उभारने में उपयोगी साबित होगा।

आपकी प्रतिक्रिया और सुझावों का इन्तजार रहेगा।

धन्यवाद

हेम पंत

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

आंखन निनुरी ढुलि गे, ढुलि गे मुयै ढुलि गे
फिण बिछुनो भुलि गे, भुलि गे मुयै भुलि गे
पानि भरन भुलि गे, भुलि गे मुयै भुलि गे
पिस्यु ओलन भुलि गे, भुलि गे मुयै भुलि गे
रोट पकून भुलि गे, भुलि गे मुयै भुलि गे
आंगकि चिथड़ि छोड़ि गे, छोड़ि गे मुयै छोड़ि गे
आंखन निनुरी ढुलि गे, ढुलि गे मुयै ढुलि गे

दैनिक कार्यकलापों के साथ बच्चे का परिचय करवाती लोरी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

हल्लोरी बाला हल्लोरी,
हल्लोरी बाबा हल्लोरी
तेरी ईजू पालड़ी घास जै रैछ
घास काटि ल्याळि, फिरि दुद्दू पिलालि
तौलि में भात खा ले
नौला को पानि पिले
गुदड़ी में पड़ि रौले
हल्लोरी बाला हल्लोरी,
हल्लोरी बाबा हल्लोरी

इस प्रसिद्ध लोरी में पहाड़ी महिलाओं की कठिन दिनचर्या की झलक मिलती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

खुण-मुण खुण-मुण जाँठी त्विन औण।
खुण-मुण जाँठी त्विन बाघ गिजौण।
खुण-मुण जाँठी रात कू हिटौया
खुण-मुण जाँठी बाघ कू गिजौया
खुण-मुण जाँठी त्विन रात नि औण
खुण-मुण जाँठी मेरू बळू नि डरोण
खुण-मुण खुण-मुण जाँठी त्विन औण।

घुंघरू वाली लाठी से निकलती खुण-मुण की आवाज शिशुओं को पसंद आती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

चिन्दा बिन्दा रावण झोली
घियाक मोळी
घ्यू दूधा की टुप्पुक बिन्दा

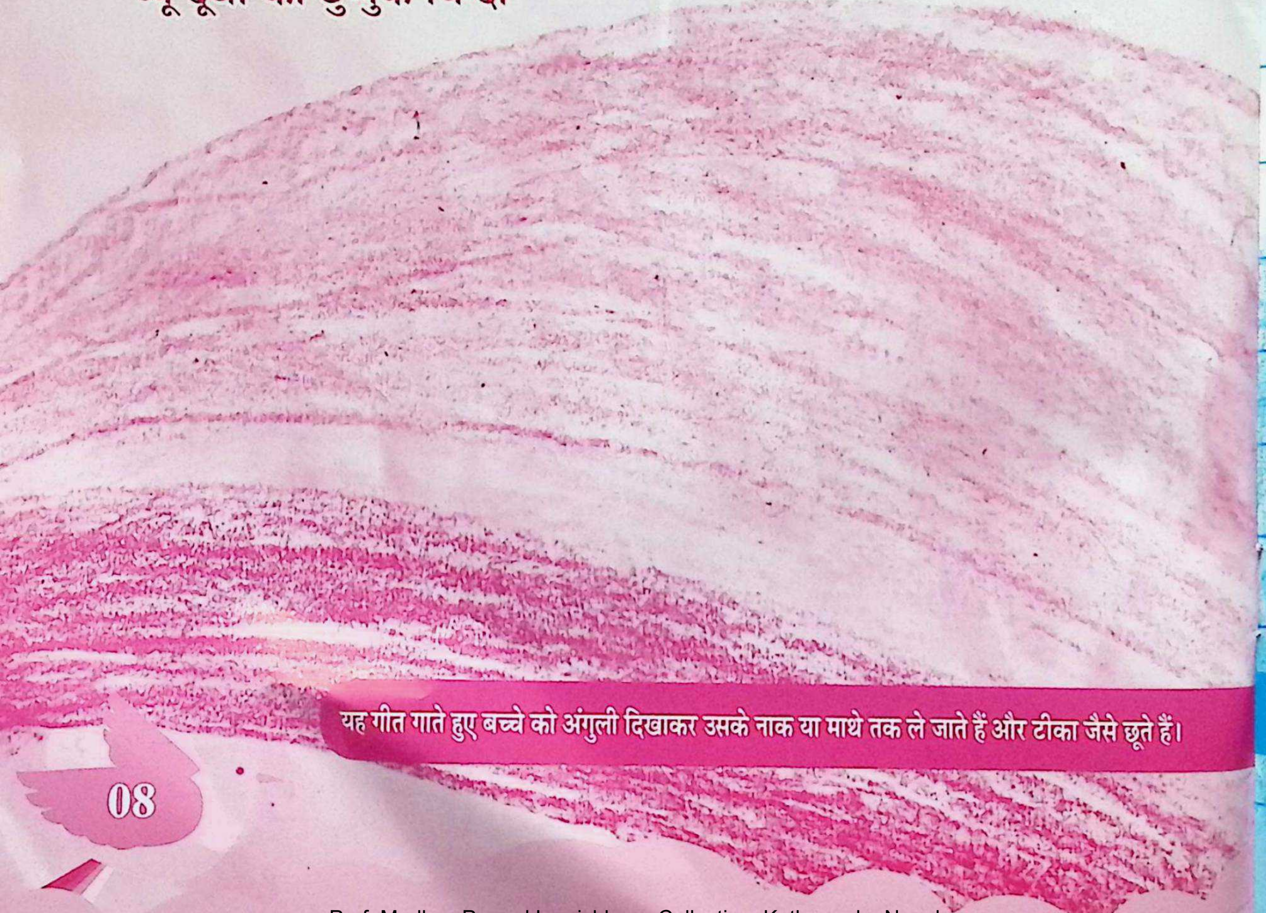

यह गीत गाते हुए बच्चे को अंगुली दिखाकर उसके नाक या माथे तक ले जाते हैं और टीका जैसे छूते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

सेजा सेजा निन्दा की बाली
निन्दा की बाली सीणों को आंद
ब्वै बौंण जयी च घास काटण कू
ब्वै-घास-काटी-ल्यालि-फिर-दुधू-पिलालि

माँ की अनुपस्थिति में घर के किसी सदस्य द्वारा बच्चे को बहलाने की कोशिश।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

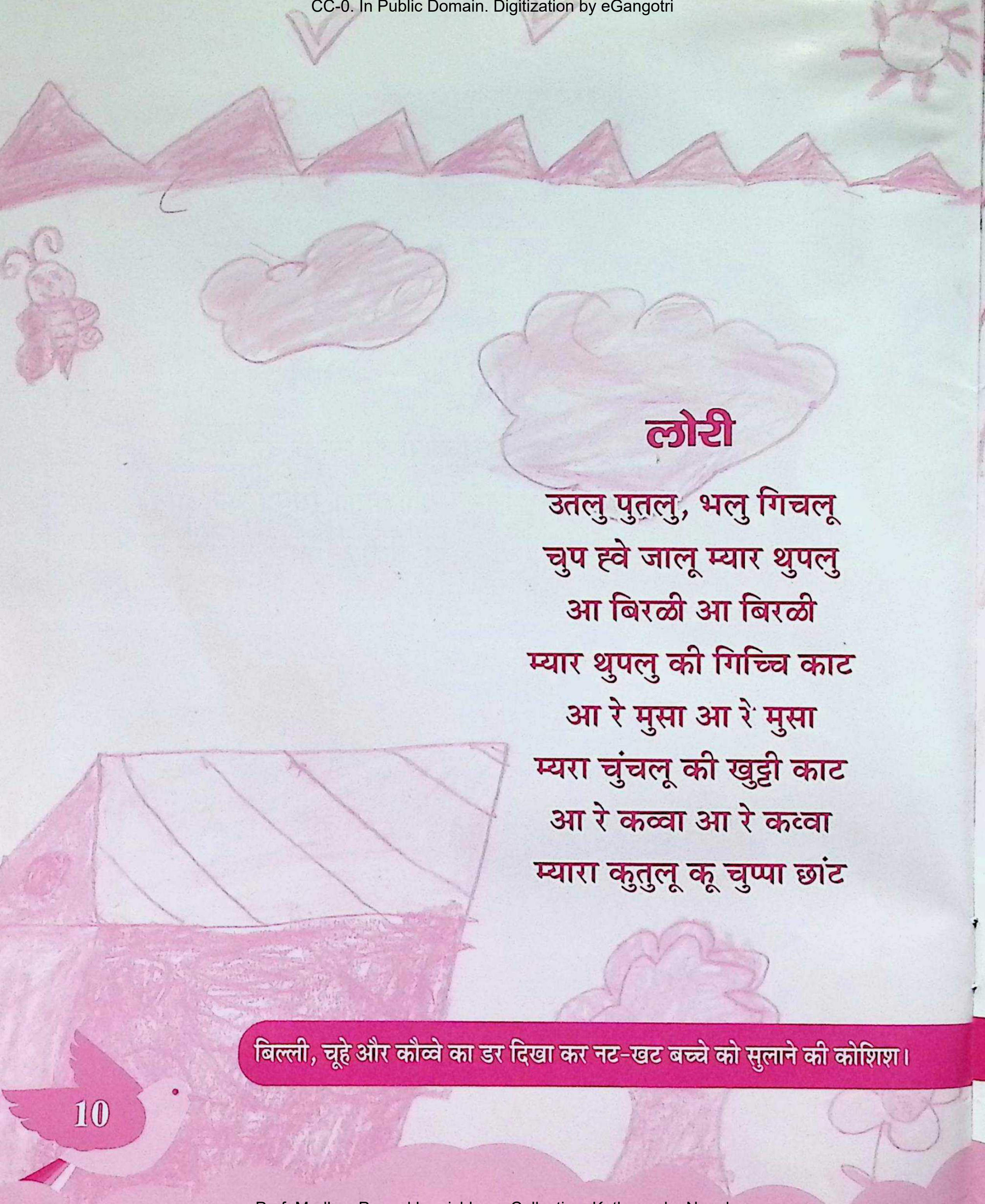

लोरी

उतलु पुतलु, भलु गिचलू
चुप ह्वे जालू म्यार थुपलु
आ बिरळी आ बिरळी
म्यार थुपलु की गिच्चि काट
आ रे मुसा आ रे मुसा
म्यरा चुंचलू की खुट्टी काट
आ रे कव्वा आ रे कव्वा
म्यारा कुतुलू कू चुप्पा छांट

बिल्ली, चूहे और कौव्वे का डर दिखा कर नट-खट बच्चे को सुलाने की कोशिश।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

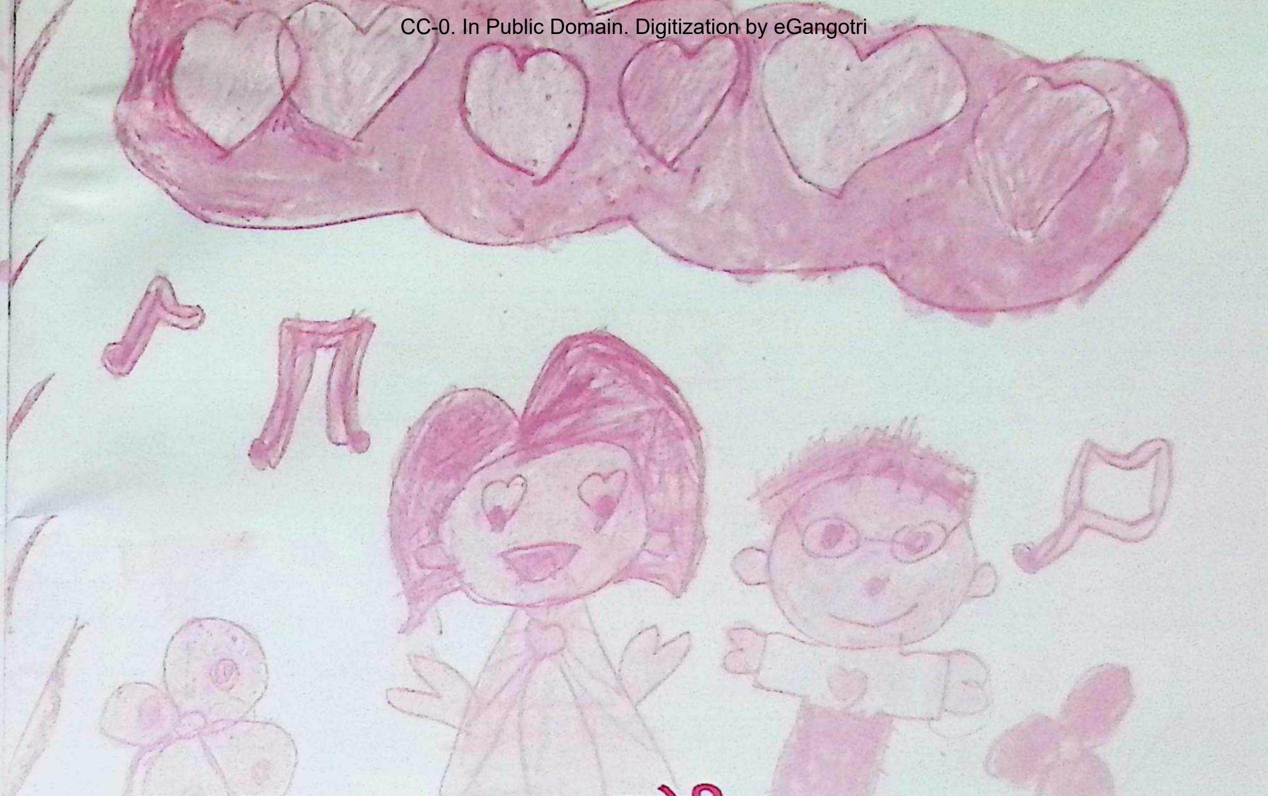

लोरी

काबुड़ी कव्वा छ,
डाला में भव्वा छ
उक्खल में पिन्ना छ,
देली में आमा छ
देखिये आमा बालो,
कव्वा पिन्ना खालो

आँगन में ओखल कूटने और साथ ही पालने में सोए हुए छोटे बच्चे की देखभाल करने का वर्णन।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

हा-चड़ि-हा, हा-चड़ि-हा
ताल गाड़ा ग्यूं पाक्या,
माल गाड़ा जौं पाक्या
बीच में मंसूर पाक्या
हा चड़ि हा, हा चड़ि हा
ठुल रुख बेडू पाक्यो,
चड़ि ले सबै चाख्यो
हा चड़ि हा, हा चड़ि हा

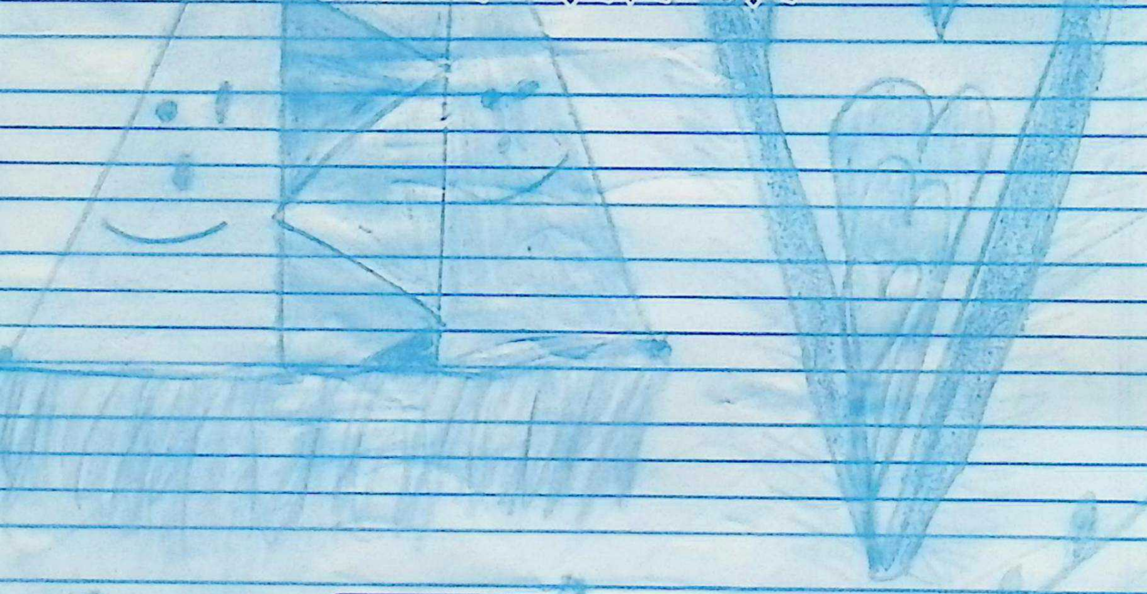

छोटी सी कहानी के माध्यम से गांव के परिवेश और खेती-बाड़ी का सुन्दर चित्रण।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

कौ लाटा काथ कौ,
सुण-काला-तू
स्यूंड़ हरै गौ,
खोज कांणा तू
अनाड़ी ले चौंरि करि,
दौड़ डुना तू
निन्नी को बखत एगो,
सै बाला तू

इस लोरी में हास्य का पुट लिए हुए एक छोटी सी कहानी पिरोई गई है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

(नहलाने-मालिश करते हुए कही जाने वाली लोरी के दो रूप)

बड़ बड़ नाक्कि, जब बसो मक्खि
बड़ बड़ पाक्कि, सोज्या में सक्खि
ऐगे पोथु कि काक्खि, लागलि काक्खि
बड़ बड़ नाक्कि, ज बसो माक्खि

बाड़-बाड़ नाको
ठुलि-ठुलि हो
चिपड़ि नाको
ठुलि-ठुलि हो
बाड़-बाड़-बाड़-बाड़!
धरती छाड़-छाड़-छाड़!

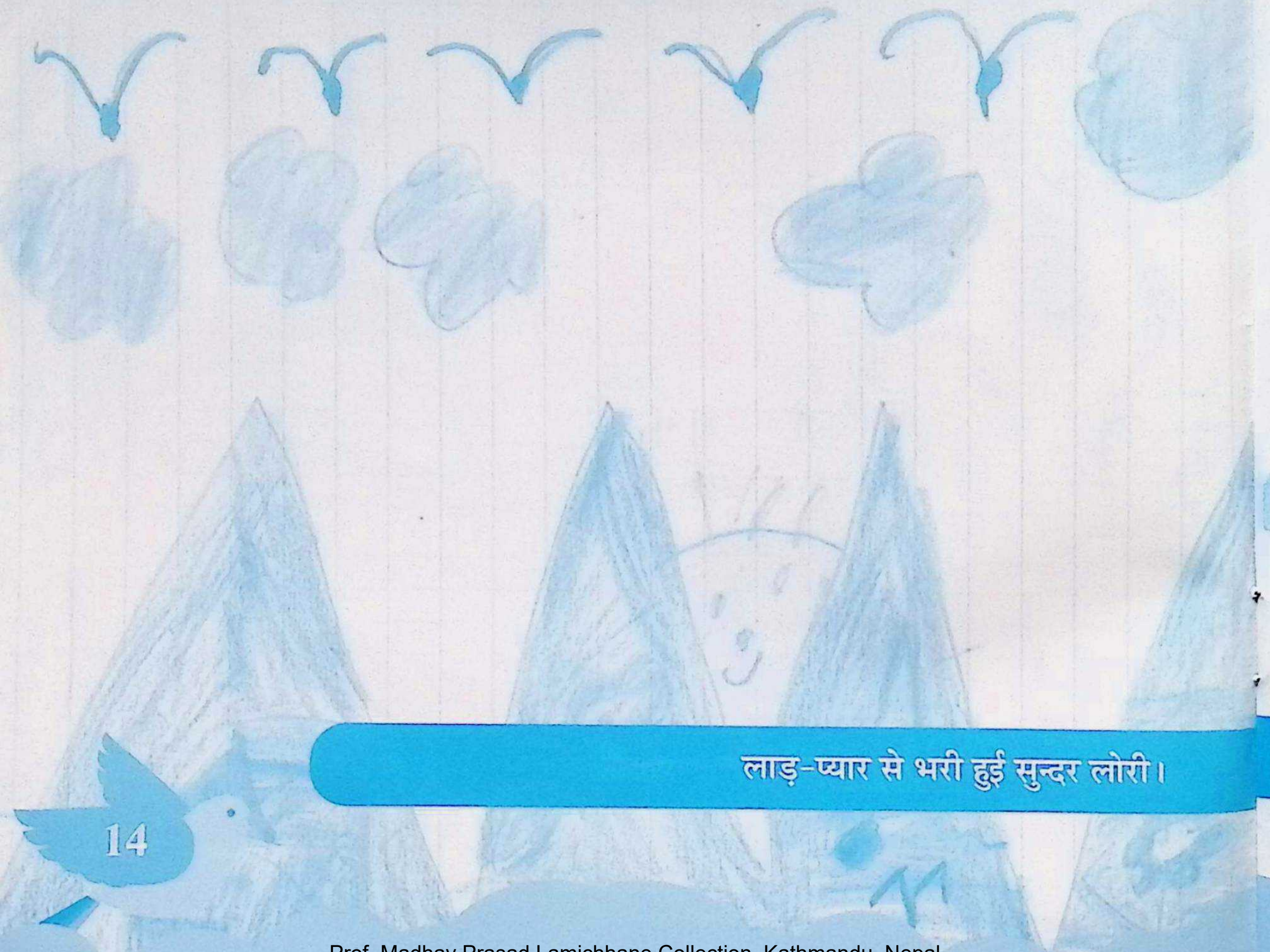

लाड़-प्यार से भरी हुई सुन्दर लोरी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

ओ मेरि देवरानि बालो देखि दिए
हालो री बाला हालो री
धान गोड़न जांछू,
बालो मरि जांछ
हालो री बाला हालो री
ओ मेरि जेठानि बालो देखि ल्यूलो
हालो री बाला हालो री
ओ मेरि देवरानि जी रये जागि रये
हालो री बाला हालो री
फुलि जाए फलि जाए,
जी रये जागि रये
हालो री बाला हालो री

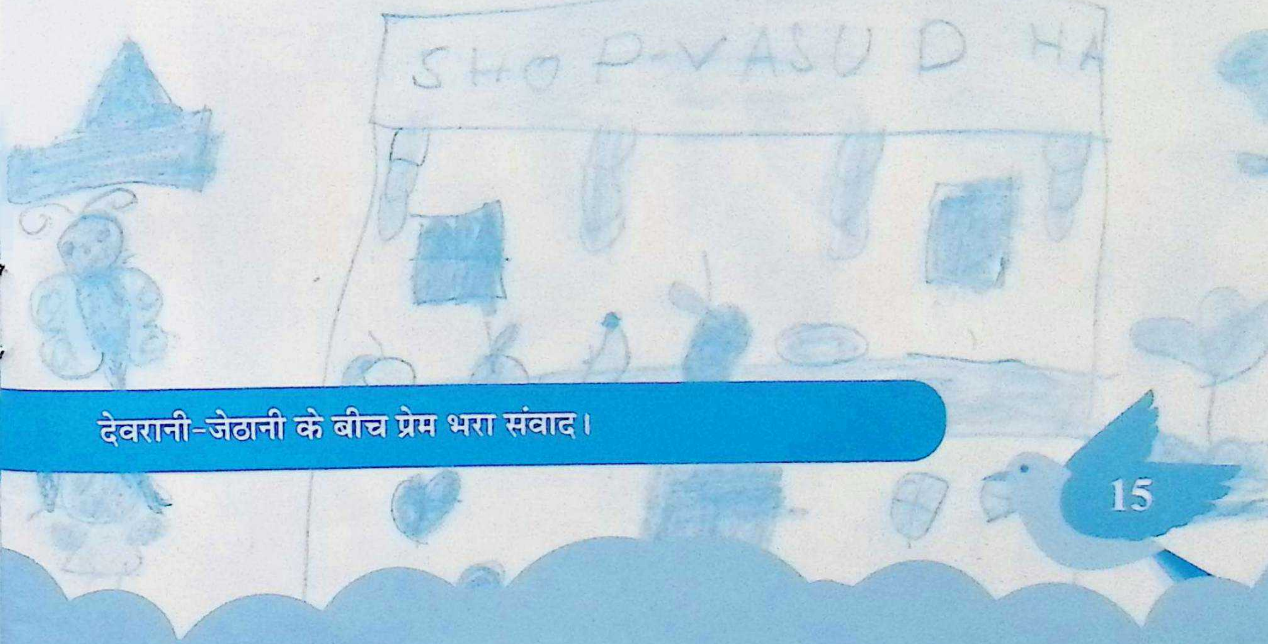

देवरानी-जेठानी के बीच प्रेम भरा संवाद।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

सुती जा सुती
दूध्या क पौण
तेरि बुई नई
डोखर लौण

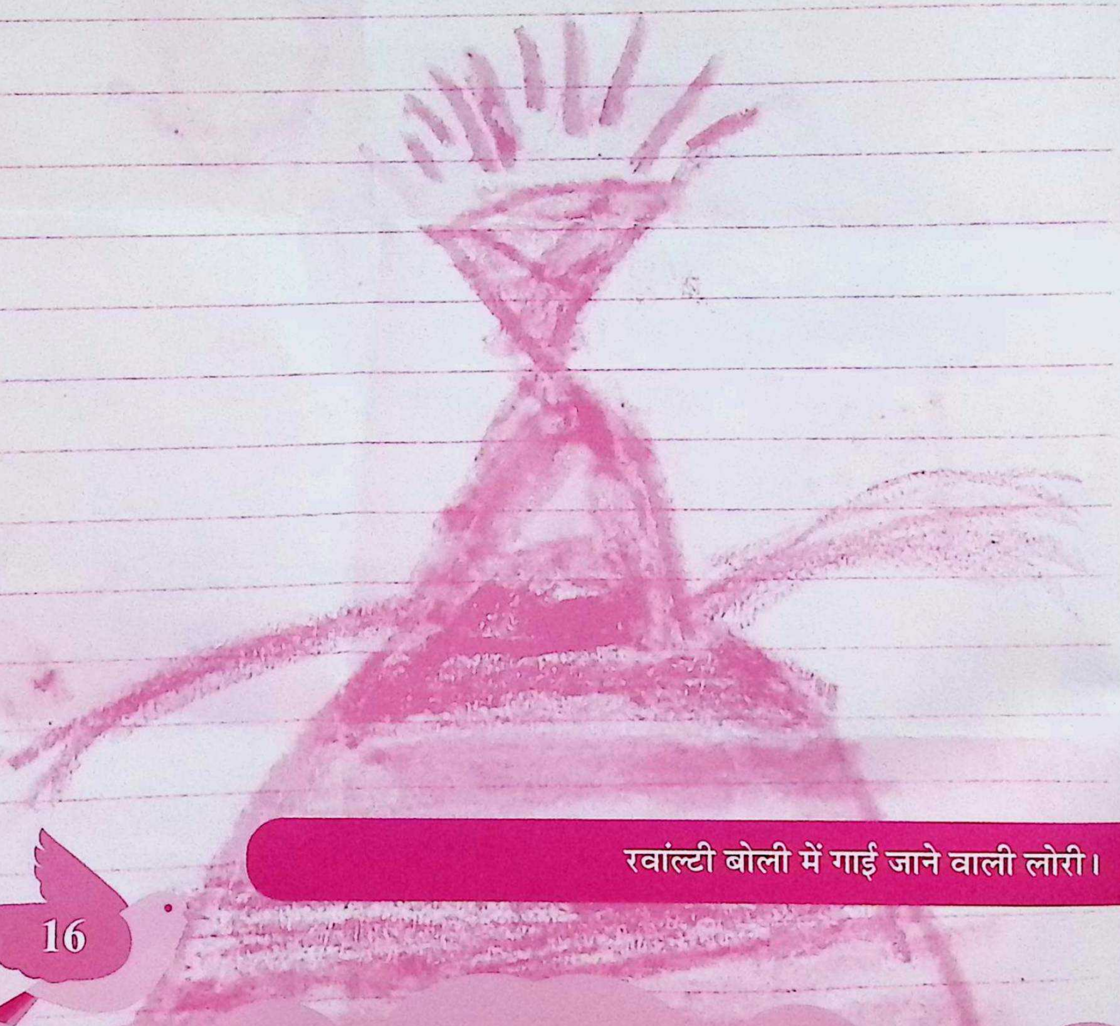

रवांल्टी बोली में गाई जाने वाली लोरी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोरी

भौ की निनुरी ये जाली,
चुप-चुप आँखी भै जाली
फूल दिसाण छजै जाली,
दू दू भाति खै जाली !

मुसी खटपट झन करिए,
माखी भिन भिन झन करिए !
घुघूती घू घू झन करिए,
कोयल कू कू झन करिए!

कुकुर हूँ हूँ झन करिए,
बिराऊ म्याऊ म्याऊ झन करिए !
बाकरी मै मै झन करिए,
सुवा टे टे झन करिये !

बाच्छि हम्मा झन करिए,
भैंसि बाई झन करिए !
दांतुलि छनमन झन करिए,
तौलि डिनमिन झन करिए

कसिनी तू भिय मुख झन पड़िए,
डाडू तू माठु माठु रडीए!
बड़बाज्यू की ह्वाक सुनिए,
हल्की भै गुडघुड करिए !

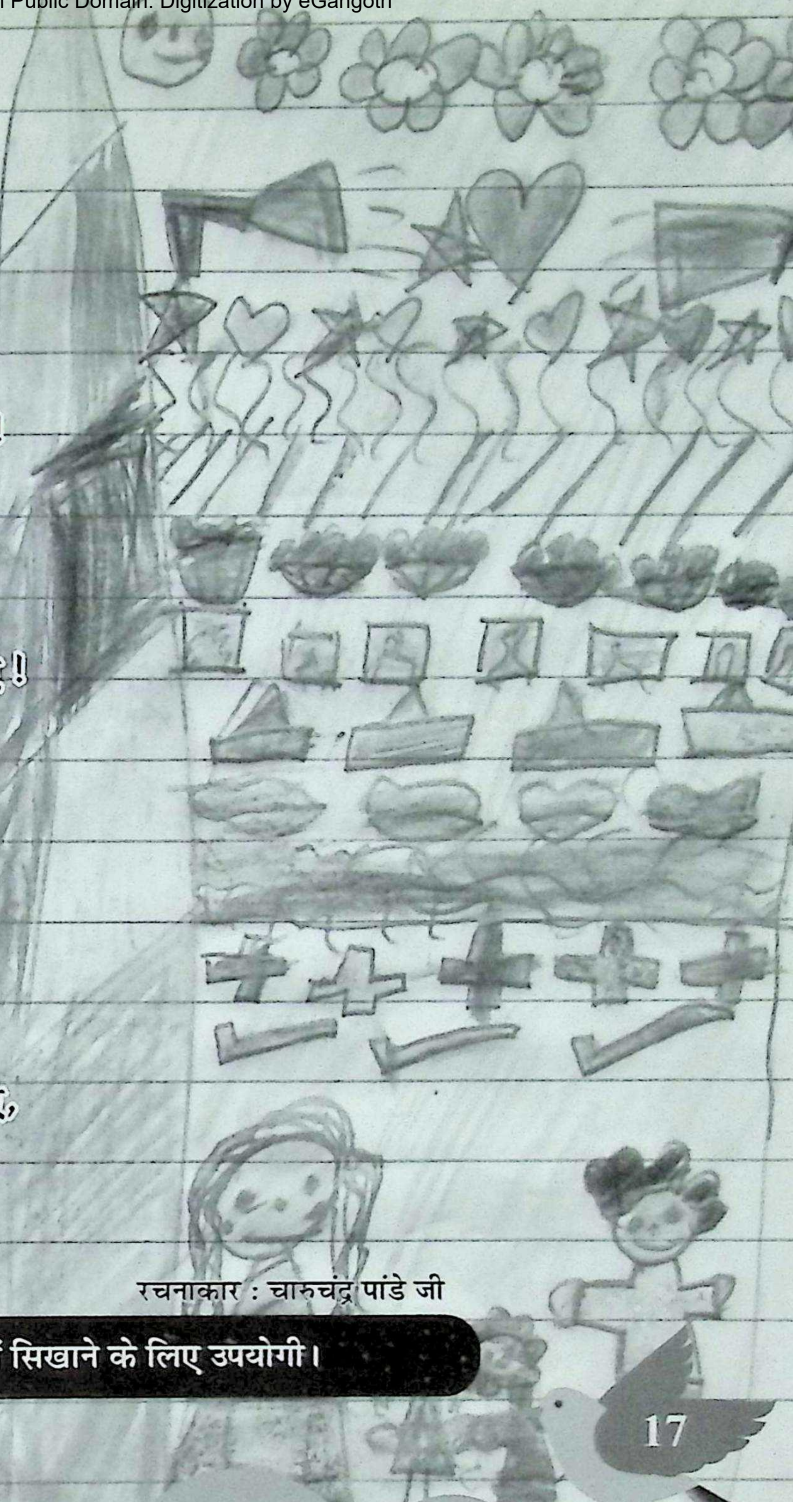

रचनाकार : चारुचंद्र पांडे जी

बच्चों को जानवरों की ध्वनियां सिखाने के लिए उपयोगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

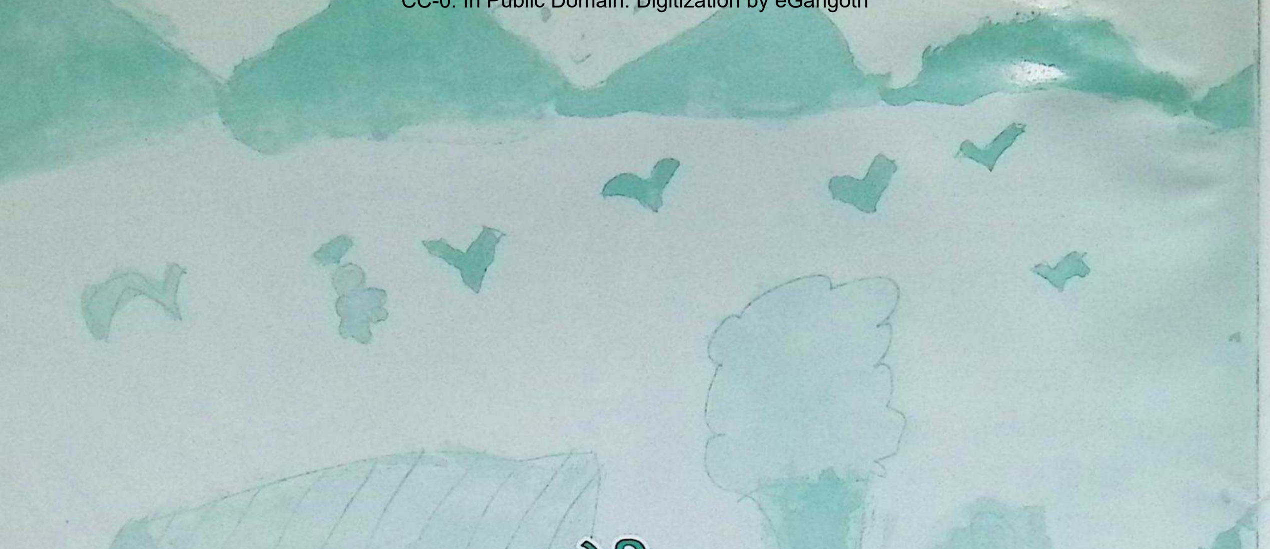

लोरी

निन्दा बाळी एजा हमारू बळू स्यैजा, दूध भात्ति खैजा।
लुकारू बळू दूधि करोन्द, हमारू बाळू स्योण करोन्द।
निन्दा बाळी एजा हमारू बळू स्यैजा, दूध भात्ति खैजा।
लुकारू बळू, खाण करोन्द, हमारू बळू स्योण करोन्द।
निन्दा बळी एजा हमारू बळू स्यैजा, दूध भात्ति खैजा।
लुकारू बळू ब्वैकी ओळ्यूं, हमारू बळू स्यण की स्याण्यू।
निन्दा बाळी एजा हमारू बळू स्यैजा, दूध भात्ति खैजा।
लुकारू बळूख्यन करोन्द, हमारू बळू स्योण करोन्द।
निन्दा बळी एजा हमारू बळू स्यैजा, दूध भात्ति खैजा।

निंदिया रानी को दूध-भात का लालच देकर बुलाने की कोशिश।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

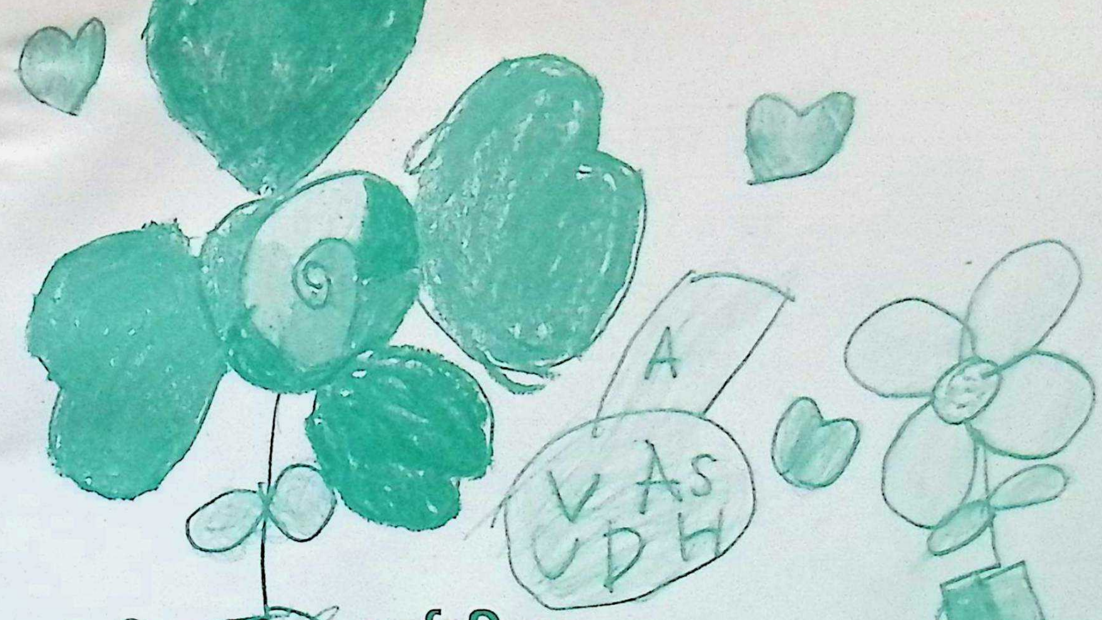

पर्वगीत

फूल देई फूल देई फूल संगराद,
सुफल करो नयो बरस तुमकू भगवान।
रंगीला-चंगीला फूल ऐंगे डाला, बोटला हरा ह्वैगे
पौन-पंछी दौड़ी गैन, डळ्यूं-फूल हंसदा ऐन
आयो नयो बरस, आज फूल संगराद।

फुलदेई के अवसर पर नव वर्ष के स्वागत में बच्चों द्वारा यह गीत गाया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वगीत

चला फुल्यारूं फूलकऽ, सौंदा-सौंदा फूल ल्यौणकऽ।
चला फुल्यारूं फूलकऽ, स्वांणा-स्वांणा फूल ल्यौणकऽ।
चला फुल्यारू किंगारिकऽ, देवता औदुं झिंगरिकऽ।।
वार-पार तेल कि धार,
जौंका नौना फुलुक नि आला,
तौंका डेरा, मुच्छाळ्यो की मार।
चला फुल्यारों डांडा, खुघ बैठिन कांडा।
फुल-फुल्यारि घऽर, नागराजा की छतरि छुटि,
बरखा लगीं भैर।

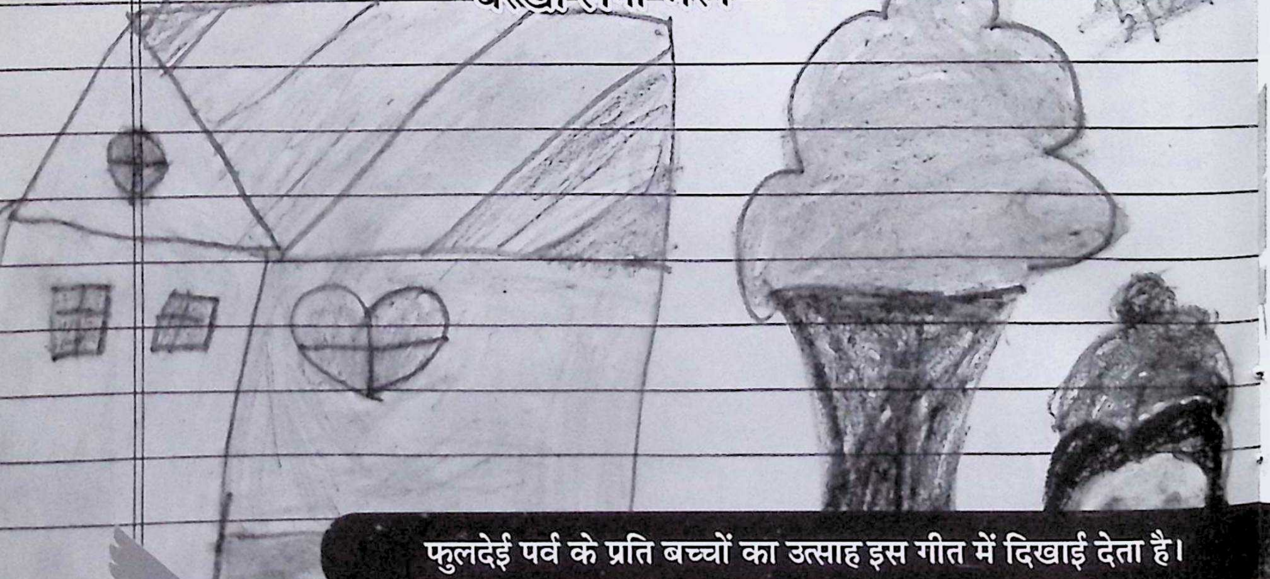

फुलदेई पर्व के प्रति बच्चों का उत्साह इस गीत में दिखाई देता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

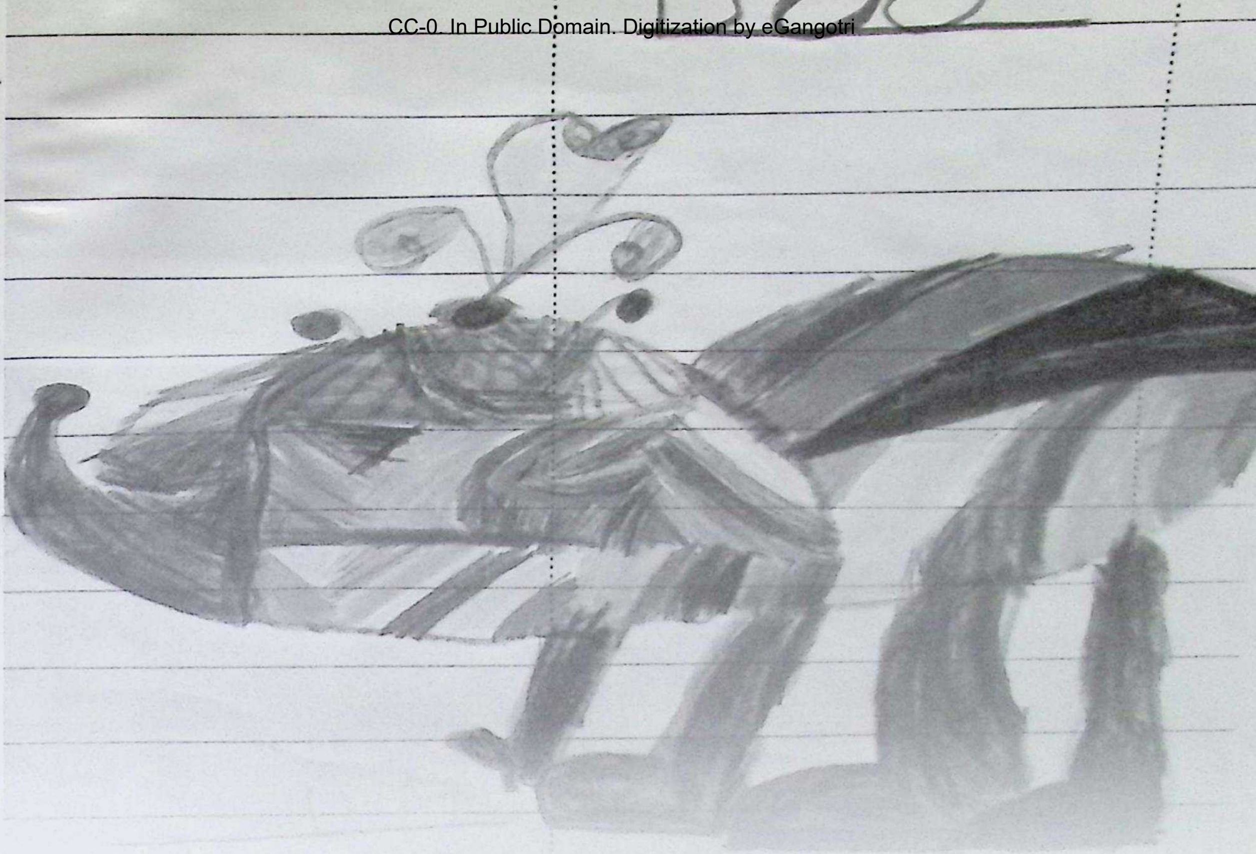

पर्वगीत

तांबे तोली दूधोभात,
फुलारी छ्वोरो खुलीग्ये रात
सेरा लाई कूल, बौला लाई फूल,
पल्या डांडा घाम लैगि,
जुठा ह्वैगी फूल।

लोक पर्व फुलदेई में बच्चे पूरे गाँव में घर-घर जा कर देहरियों पर फूल डालते हैं और यह गीत गाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वगीत

जै-जै घोघा माता फ्यूंली का फूल
अलि खोलि-पलि खोलि घोघा नचायो
घोघा पुजारी, क्वैनि पायो

फुलदेई त्यौहार के दिन सुबह-सुबह बच्चे गौरा मैया के प्रतीक 'घोघा डोली' को पूरे गाँव में घुमाते हुए यह गीत गाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वगीत

फूलदेई छम्मा देई, देणी द्वार भर भकार
तुमार भकार भरीजो, हमार टुपार
फूलदेई छम्मा देई, जतुके दिछा उतुके सही
फूलदेई छम्मा देई, देणी द्वार भर भकार
त्वै देई के बार बार नमस्कार

फूलदेई के दिन बच्चे फूलों की टोकरी लेकर घर-घर जाकर मंगलकामना करते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वगीत

काले कव्वा काले, घुघुतिक माला खाले
काले कव्वा का का, पूस कि रोटी माघे खा
काले कव्वा आ जा, लगड़ पूरी खा जा
ले कव्वा बड़ो, मैं के दिए सुनाक घड़ो
ले कव्वा ढाल, मैं के दिए सुनाकि थाल
ले कव्वा तलवार,
मैं के दिए भलो भलो घरबार

मकर संक्रांति पर्व पर बच्चे घुघूती माला गले में पहनते हैं और इस गीत को गाते हुए कव्वे को पकवान खाने के लिए बुलाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वगीत

फूलदेईक छापड़, खतड़ुवा क काकड़
घुघुतिक माव, उतरेनिक काव
बसंत पंचमिक जौं, सोनोक हर्याव
बगवाइक च्यूड़, चौतौक आव
त्यारोक घ्यूँ , आब कि कूँ

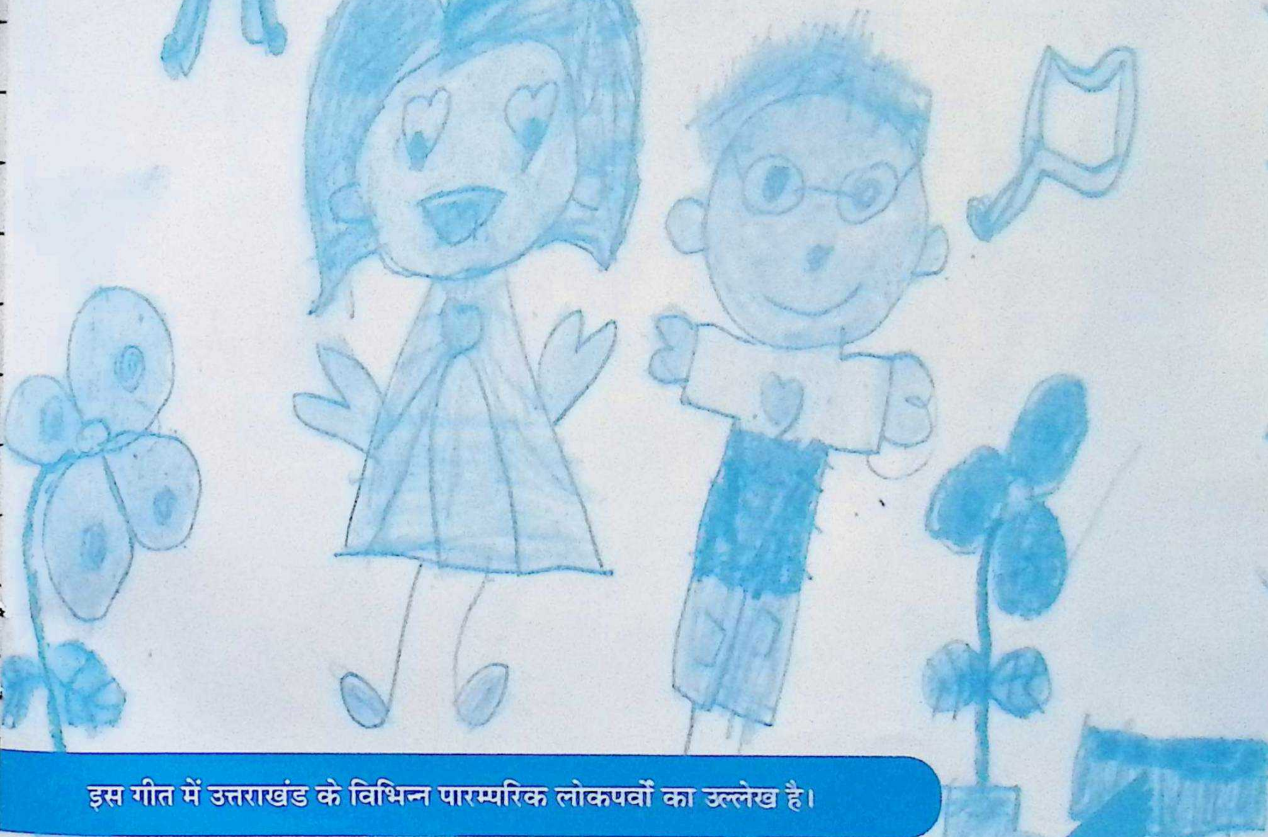

इस गीत में उत्तराखंड के विभिन्न पारम्परिक लोकपर्वों का उल्लेख है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

घुघूति बासूति, क्याखांदी? – दूदभाती
घुघूति बासूति, मामा कख छ? – मालकोटी
क्या लालो? – दूद भातौ
कू खालो? – दिदा खालो।
दिदा कु जुटठो कू खालो? – बुबा खालो।
बुबा को जुट्ठोकू खालो? –ब्वै खाली।
ब्वै को जुट्ठो कू खालो?– दीदी खाली
दीदी को जुट्ठो कू खालो?
दीदी को जुट्ठो जीजा खालो।

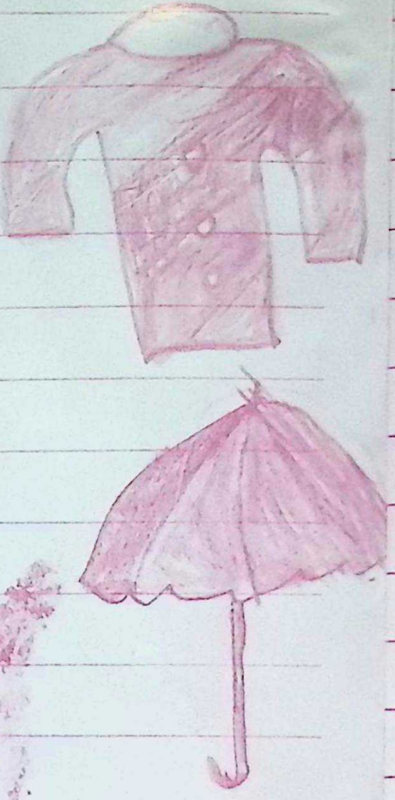

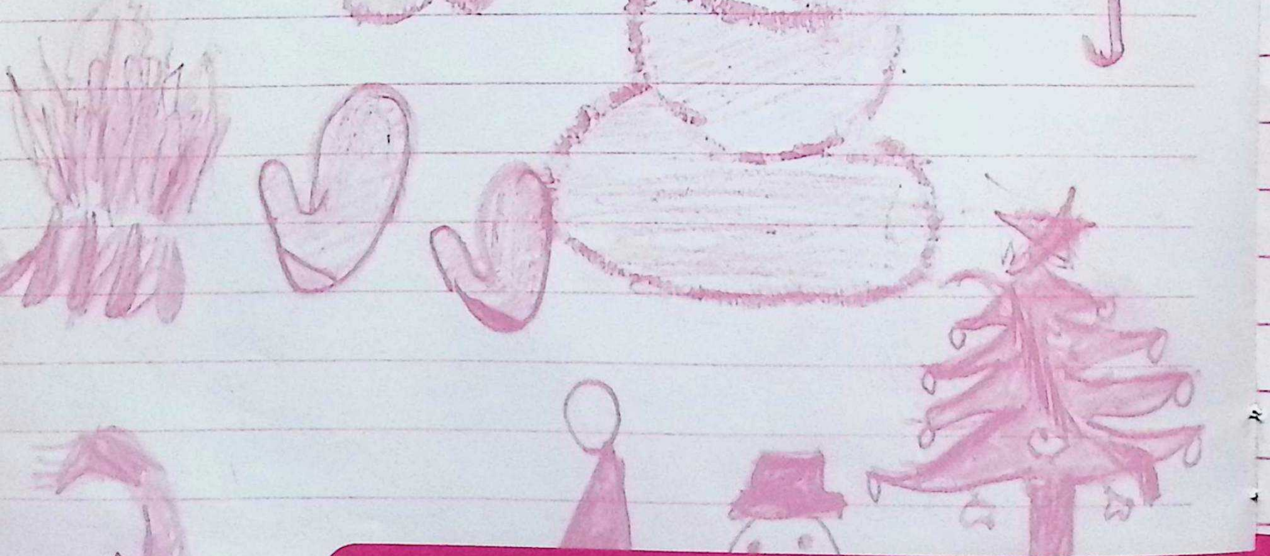

बच्चे को पेट में बिठाकर या पीठ के बल लेटकर पैरों में झुलाते हुए यह गीत गाया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

घुँघरा माई की दाळ पिसै
घुँघरा माई की दाळ पिसै
ग्यूंजौ का झिंस झिसै
घुँघरा माई की दाळ पिसै
मेरि पळयो खत्वी बिसै
घुँघरा माई की दाळ पिसै

झूला झूलते हुए बच्चे और किशोर यह गीत गाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

बिराळी-बिराळी कख जांदी?
बल माछा मारणो कू
मारली कन?
छप छप छप छप
काटलीकन?
खर्स खर्स खर्स खर्स
पकैली कन?
छयाँ -म्यां
खैली कन?
कुर मुर - कुर मुर
तैबरी आयो एक कुत्ता
बिराळी भाजण बैठी सुरक सुरक
मैं माछा मारणो जान्दो

बच्चे को पेट में बिठाकर या पीठ के बल लेटकर पैरों में झुलाते हुए यह गीत गाया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

हे भुलि बिमला,
कख पाक्यो छ तिमला
हे भुलि सुमी,
कख पकीं छन ऊमी
हे भुलि मौणी,
कख पकीं छ कौणी
हे भुलि सत्ति,
कन मरिगे मत्ति

नाम के साथ तुक मिलाकर सहेलियों को चिढ़ाने वाला गीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

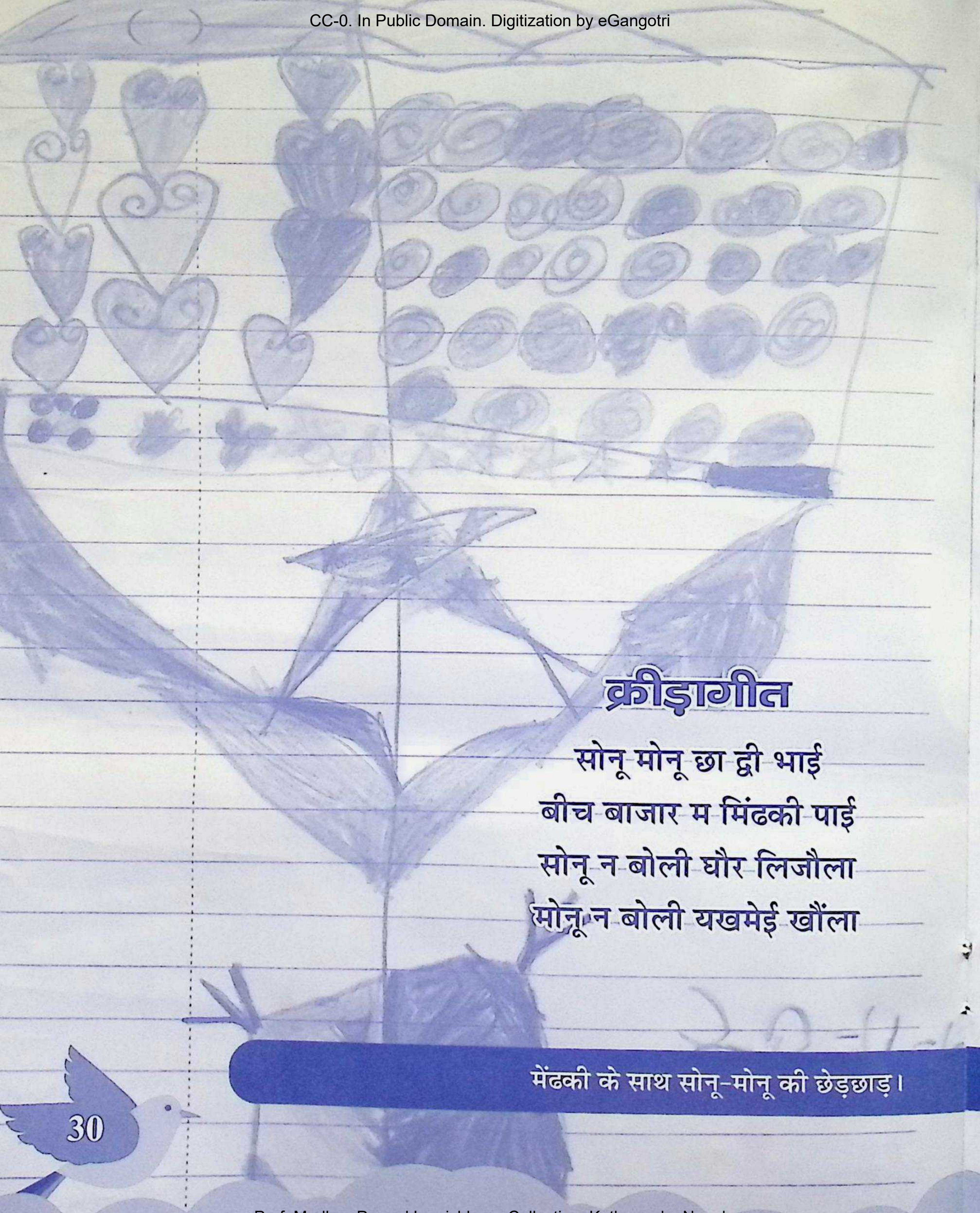

क्रीड़ागीत

सोनू मोनू छा द्वी भाई
बीच बाजार म मिंढकी पाई
सोनू न बोली घौर लिजौला
मोनू न बोली यखमेई खौंला

मेंढकी के साथ सोनू-मोनू की छेड़छाड़।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

मिर्च करदी स्वी स्वी,
हल्दि करदि रंग
मैणु मसालि लांदी गंध,
तेल करदि चम
लूण ब्वालि मी नि त,
सब्बि धानि कम

रसोई में सामान्य तौर पर उपलब्ध होने वाले मसालों से परिचय।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

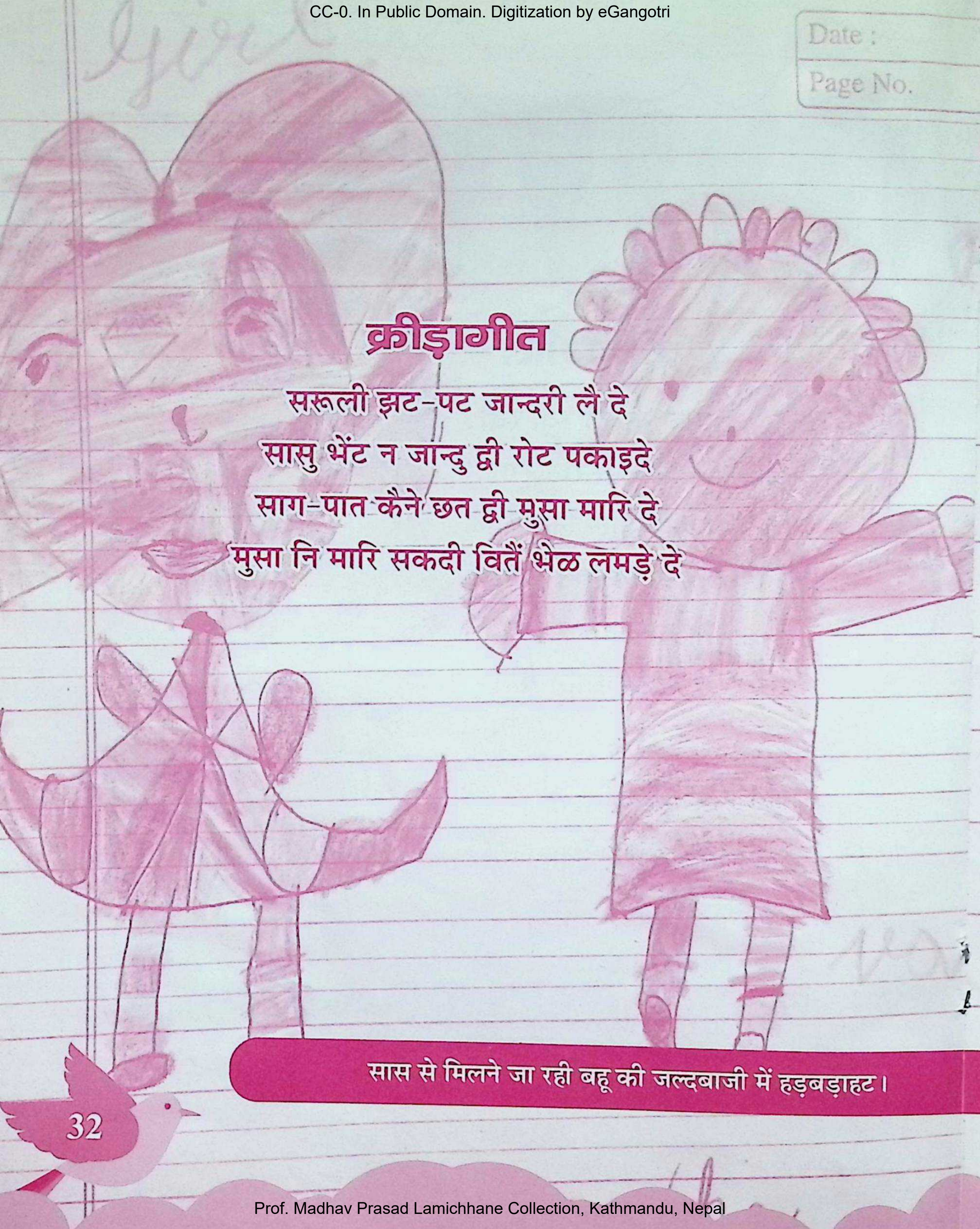

क्रीड़ागीत

सरूली झट-पट जान्दरी लै दे
सासु भेंट न जान्दु द्वी रोट पकाइदे
साग-पात कैने छत द्वी मुसा मारि दे
मुसा नि मारि सकदी वितैं भेळ लमड़े दे

सास से मिलने जा रही बहू की जल्दबाजी में हड़बड़ाहट।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

भुक्की रैग्यों ब्याळी, पधनुं करों की स्याळी
स्वाला लायी ब्याळी, नौ मण कंडाळी खैग्यों
सौ मण बसीं गो, नौ मण का अरसा खैने
सौ मण की स्वाळी, भुक्की रैग्यों ब्याळी
पधनुं करों की स्याळी, स्वाला लाई ब्याळी
बमणु को बाड़ी खेंडो, जजमनुं को झ्वळी
हौरी खुणि चटणि, खांदु गलागळी
भुकी सेग्यों ब्वाळी, भुक्की रैग्यों ब्याळी
पधनुं करों की स्याळी, नौ मण तिमला खैग्यों
सौ मण का बेड़ु, नौ मण काफाल खैने
सौ मण फळीन्डा, फिर भी कर दो आळी जाळी
भुवकी रैग्यों ब्याळी, पधनुं करों की स्याळी
नौ मण झंग्वर खैग्यों, सौ मण खिचड़ो खैने
लूण राळी राळी,
फिर भी भुक्की रैग्यों ब्याळी
पधनुं करों की स्याळी

पधान की साली को चिढ़ाता हुआ शरारत भरा गीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

पंकी गौड़ि पंकी गौड़ि
उज्याण-किले खांदी ?
ग्वस्यूं घास नि देंदा।
ग्वस्यूं ग्वस्यूं तुम घास किले नि देंदा ?
डाळी नि मोळदी।
डाळी-डाळी तू किले नि मोळदी ?
बरखा नि होंदी।
बरखा-बरखा तू किले नि होंदी ?
सर्ग निफटदू।
सर्ग-सर्ग किले निफटदू ?
बादळे नि औंदा।
बादळ-बादळ तुम किले नि ओदा ?
क्वे बुलांदो नि।
फेर लोग बादळ बुलांदा,
सर्ग फटदू, बरखा होंदी,
डाळी मोळदी, ग्वस्यू घास देंद,
पंकी खांदी, उज्याण नि जांदी।

ऋतुओं के साथ होने वाले प्राकृतिक बदलाव को इस गीत के माध्यम से बच्चे आसानी से समझ सकते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

बान बांटे था था
चौलु मुठी खा खा।

***

डुंडी बांगणी लचक पौ
राजा बोलऽ जल्दी औ।

***

नौले मेर गुंदौले
नौली लोगों तिलु कू तेल।

रवांल्टी बोली के तीन लघु क्रीड़ागीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

छम छांणा, मोत्यूं दाणा
पार बटि ऐग्या, उदै राणा
उदै राणा की सिंगी बाजी
सिंगी मिना तोड़-ताड़िकी जल्वट ख्याया
जल्वट मीतैं पांग मीला
पांग मी न लुआर द्याया
लुआरण मिथे दाथी द्याया
दाथिन-मी न घास काटा
घास मी न गौड़ी द्याया
गौंड़ीन मीतैं दूद द्याया
दूद मी न गंगा चारा
गंगल मीतै सैर द्याया
सैर मी न राजा द्याया
राजाल मीतैं, घोड़ी द्याया
मि गौं पिफी अर
मेरि घोड़ी चफळम् चिफळी

गीत के माध्यम से खेती-पशुपालन की प्रक्रिया समझाने का प्रयास।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

घुघूती बासूति
आमा कां छ ?
खेत में छ
कि करन रे छ ?
घास काटन रे छ
घास को खालो ?
गोरु बाच्छी खालि
गोरु दुद्दू दे लो
भव्वा उकें पि लो

बच्चों को पेट में बिठाकर या पीठ के बल लेटकर पैरों में झुलाते हुए यह गीत गाया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

धनपुतली धान दे,
कौव्वा खा छी कान दे
धनपुतली दान दे,
सुप्पा भरी धान दे
तेरी बरियात पछिल देखुंल,
बरखा ऐगे जाण दे

जमीन से निकलती हुई धनपुतली (Flying Ants) देखकर बच्चे जिज्ञासा पूर्वक यह गीत गाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

आ आ चड़ि तेरे काटेंगे कान
किसने चुराए लाला जी के धान
खाई-पीई चड़ि मोटी बनी
ताल गाड़ा, माल गाड़ा घर को गई
चड़ि चूँ चूँ, मुसि चूँ चूँ
धान मंडुवा तूने खाया,
कपड़ा काटा क्यों?

हिंदी-कुमाउनी मिश्रित भाषा युक्त यह गीत बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

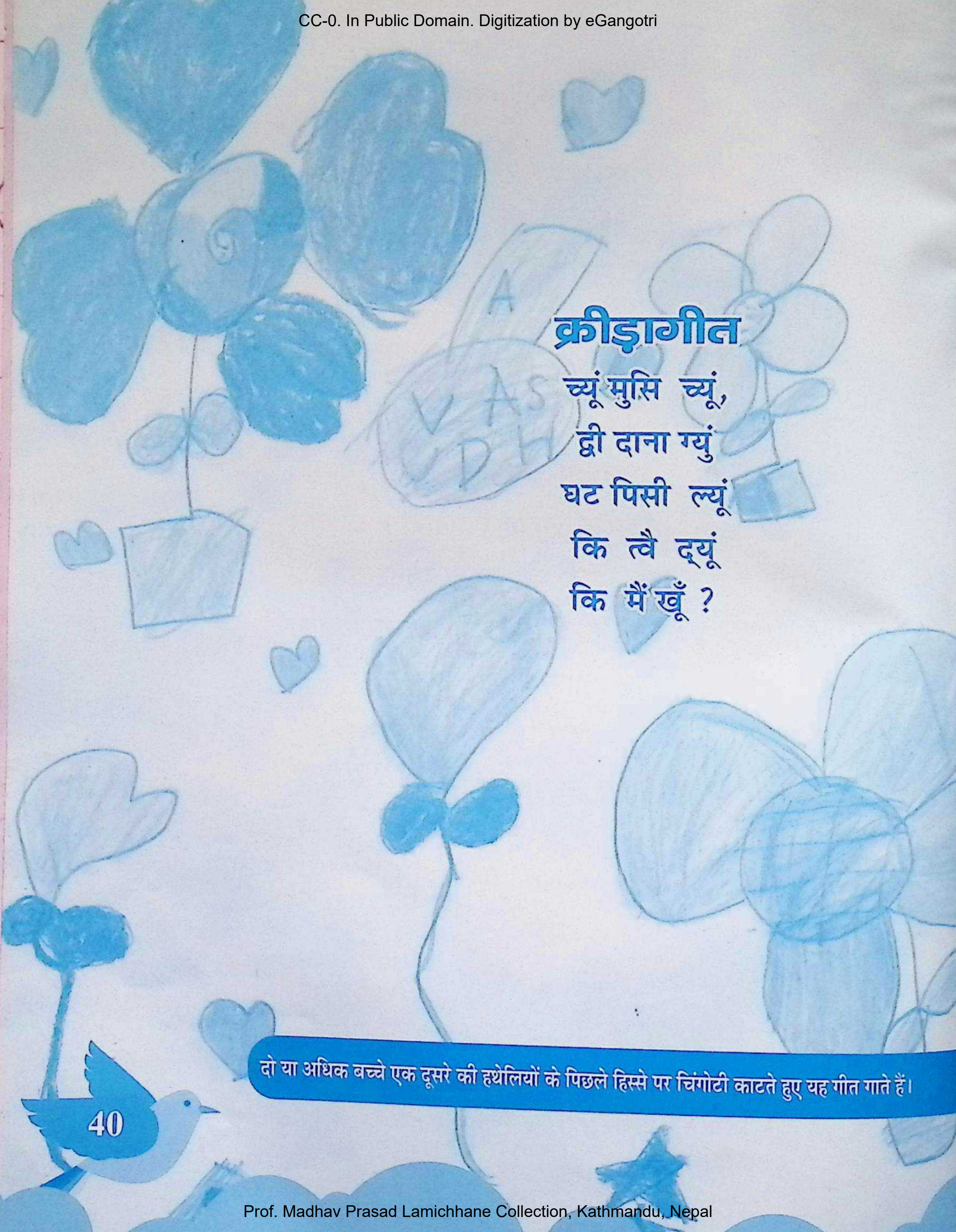

क्रीड़ागीत

च्यूं मुसि च्यूं,
द्वी दाना ग्युं
घट पिसी ल्यूं
कि त्वै द्यूं
कि मैं खूँ ?

दो या अधिक बच्चे एक दूसरे की हथेलियों के पिछले हिस्से पर चिंगोटी काटते हुए यह गीत गाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

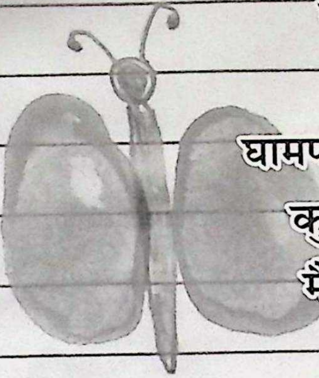

बरखा दीदी इथकै आ,
घाम भिना उथकै जा
घामपानि घामपानि स्यालोक ब्या
कुकुर बिरालु बरियाती ग्या
मैं थे कुनान दच्छिना ल्या

★ ★ ★

घमुलि-दीदी यथ=यथ आ
बादल भीना पर-पर जा

★ ★ ★

घाम=द्यो, घाम=द्यो
स्याव'क ब्या
कुकुर-बिराव
बरेती भ्या!

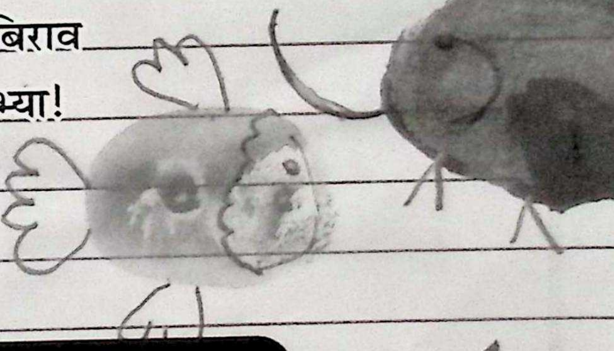

बरसात के दिनों में मौसम से जुड़े बालगीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

आ द्यो, आ द्यो
अउवा का बन बटि
कपोलि का छान बटि
समुंदर का जड़ बटि
अगास का टुक्क बटि

आ द्यो, आ द्यो

भारी गर्मी के दिनों में बारिश को बुलाने के लिए बच्चे इस गीत को गाते हैं ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

खेल दरी, दरी का दरी
दरी न्है गे हिमाल दरी
को दरी बिछालो दरी,
मेर बाज्यू बिछाला दरी
को दरी बिछालो दरी,
मेरि ईजू बिछाला दरी
खेल दरी, दरी का दरी
दरी न्है गे हिमाल दरी

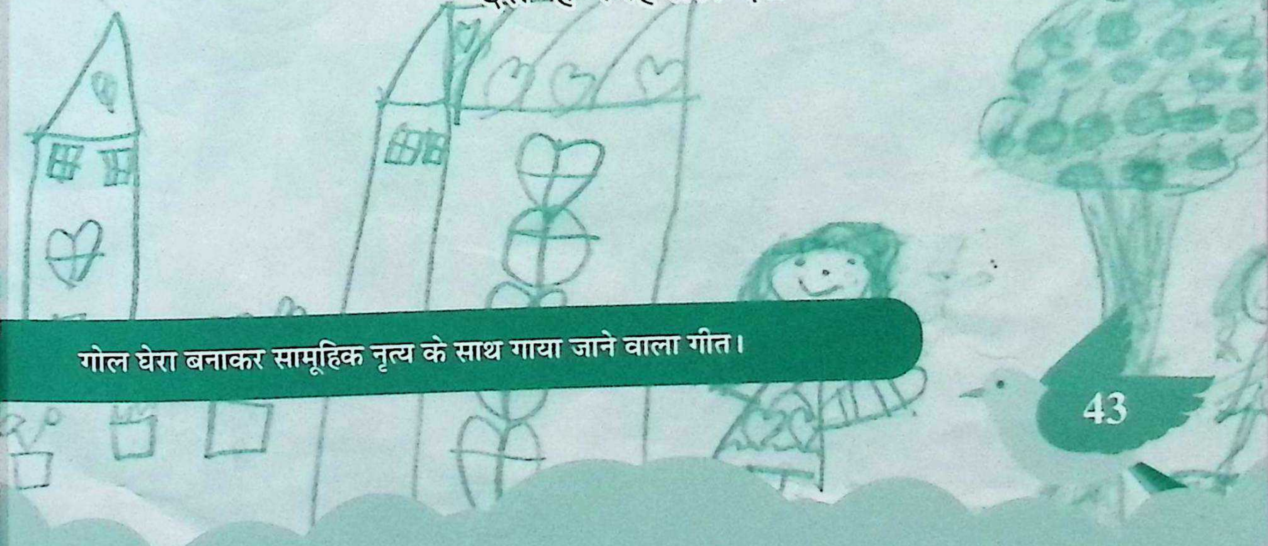

गोल घेरा बनाकर सामूहिक नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

उठ उठ नाक, चिपड़ि नाक, तुरतुरि हो
उठ उठ नाक, मलकोटि जूलों, दुद भात खूंलो
दाल को भड्डु घुर्याइ ऊंलो
सागकि कढ़ाई बखेरि ऊंलो
दुद भात खूंलो, खिरै कि कढ़ाई पोछि खैं ऊंलो
उठ उठ नाक, चिपड़ि नाक, तुरतुरि हो

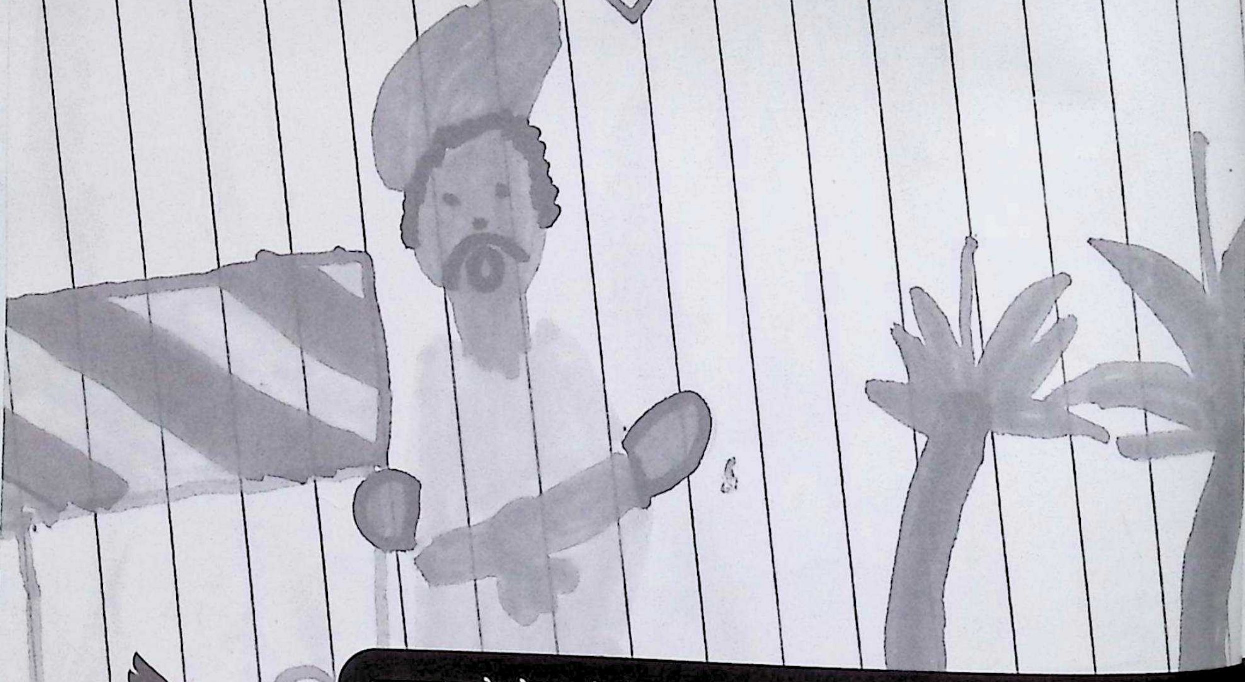

नवजात बच्चे को नहलाने के बाद मालिश करते समय नाक को सहलाते हुए गाया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

काँस काटो, बाँस काटो
खिन्न काटो मैदान
रियूंनी चेलि मिले मांगि
तब मैं बन्यु पधान

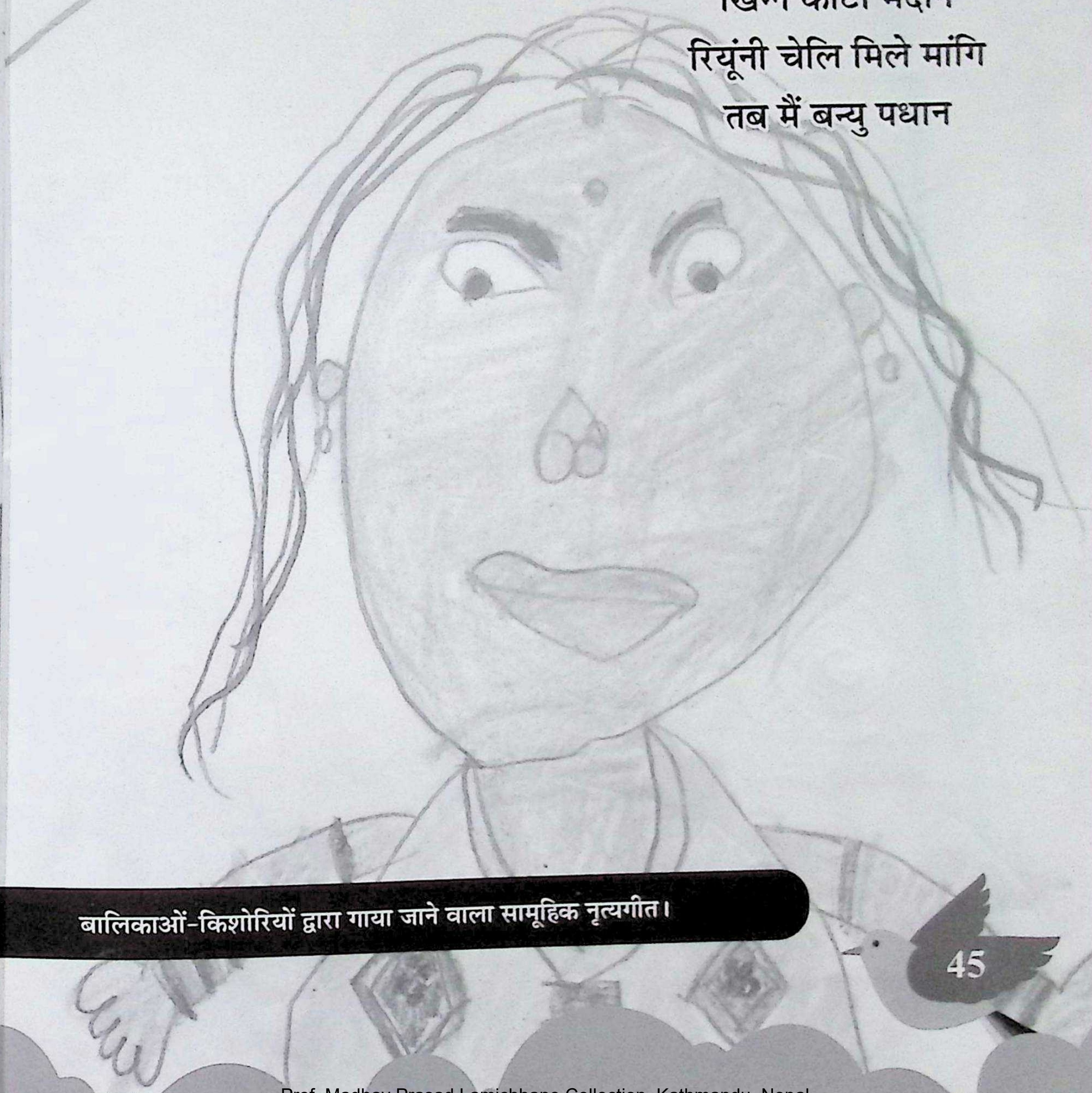

बालिकाओं-किशोरियों द्वारा गाया जाने वाला सामूहिक नृत्यगीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

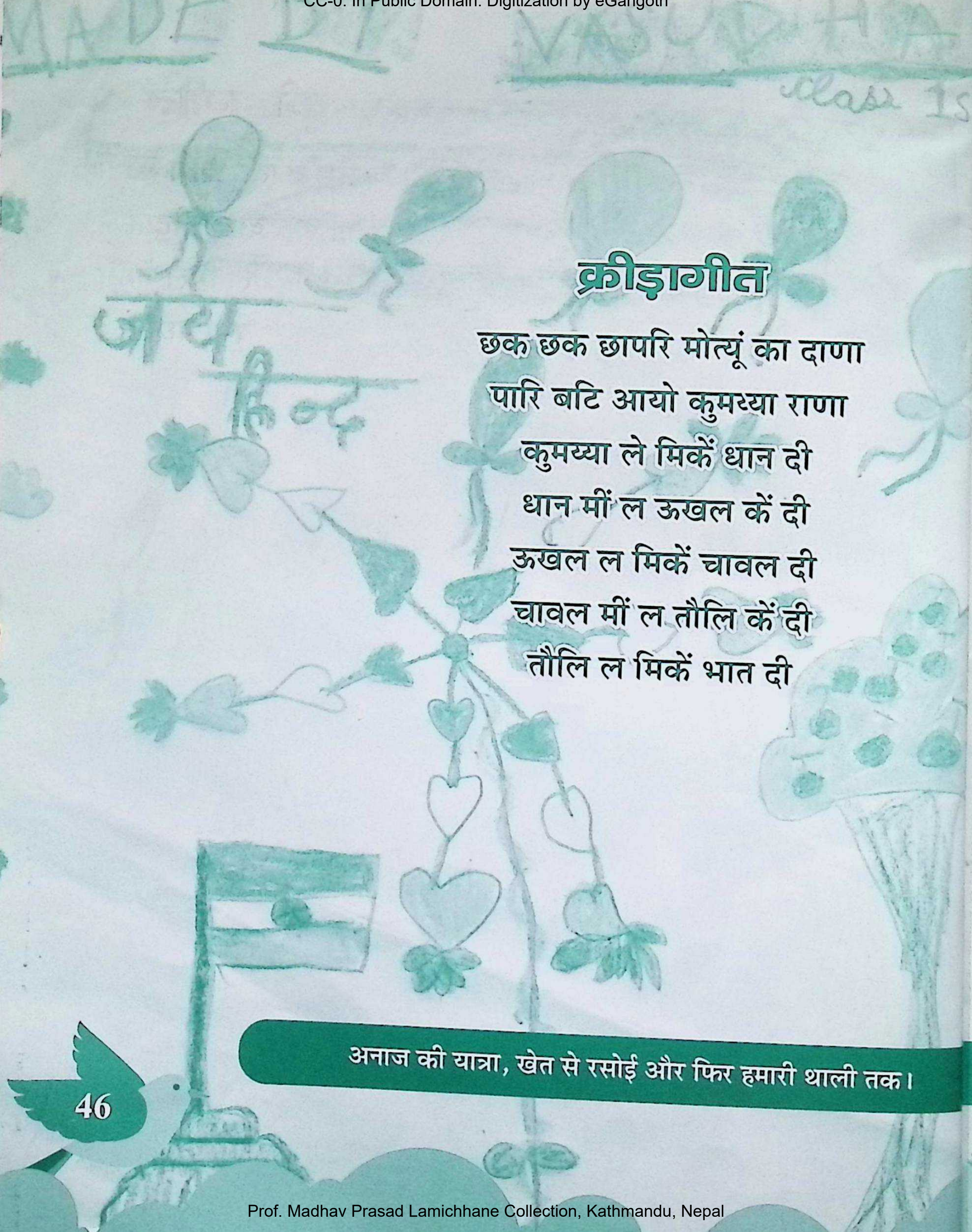

क्रीड़ागीत

छक छक छापरि मोत्यूं का दाणा
पारि बटि आयो कुमय्या राणा
कुमय्या ले मिकें धान दी
धान मीं ल ऊखल कें दी
ऊखल ल मिकें चावल दी
चावल मीं ल तौलि कें दी
तौलि ल मिकें भात दी

अनाज की यात्रा, खेत से रसोई और फिर हमारी थाली तक।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

अटकन बटकन दही चटाकन
बन फूले बनवारी फूले
दाता जी का झुल्ला झूले
ओड़ मोड़ दैनि हत्थि तोड़
बरखा लागि झमाझम,
बुड़िया भाजि बन बन
लै बुढ़ी खाजा - तेर गोरु भाजा

द्यो लागौ दण-दण
बुड़ि भाजी बण-बण
ले बुड़ी खाजा
त्यार गोरू भाजा!

बच्चों की कल्पनाशीलता बढ़ाने वाला वर्षा गीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

उड़कुच्चि मुड़कुच्चि दाम दलेच्ची
लइयां लैची पीतल कैंची
ओड़ कि चेलिया कसि कसि छैन
बिंद्राबन में खेलनि खेल
ओड़ मोड़ दुई हात्थि तोड़

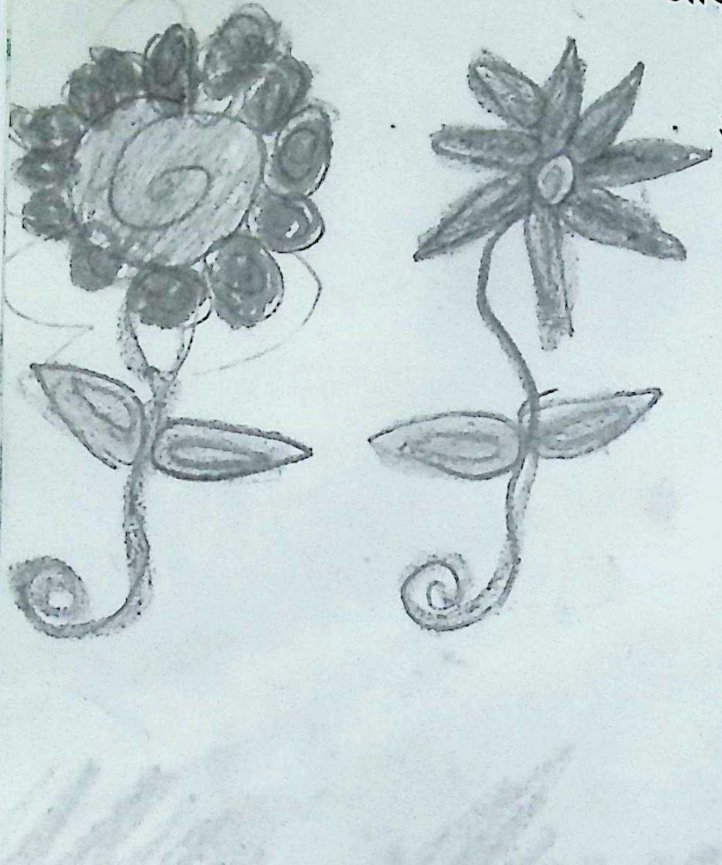

उत्साह से भरा सामूहिक नृत्यगीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

ल्वार ल मिकें दरांति दी
दरांति मैं ल घसियारी के दी
घसियारी ल मिकें घास दी
घास मैं ल गोरु कें दी
गोरू ल मिकें दूध दी

पशुपालन प्रक्रिया की साधारण शब्दों में अभिव्यक्ति।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

पारि पातल बाघ भेटि
बाघल मैं हैं, छौंन दी
छौंन मैंल, चील थें दी
चीलेल मैं है, पख्यान दी
पख्यान मैंल, ल्वार थें दी
ल्वारल मैंहै, स्वीड़ दी
स्वीड़ मैंल, ढोलि थै दी
ढोलिल मैंहै, बुटुवा दी
बुटुवा मैंल, ओखल कुटुवा थें दी
ओखल कुटुवा ले मैंहै, खाजा दी
खाजा मैंल ग्वाला थें दी
ग्वालाल मैंहै, दांथुलि दी
दांथुलिल मैंल, घास काटी

समाज में विभिन्न व्यक्तियों के बीच कार्य विभाजन का परिचय।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

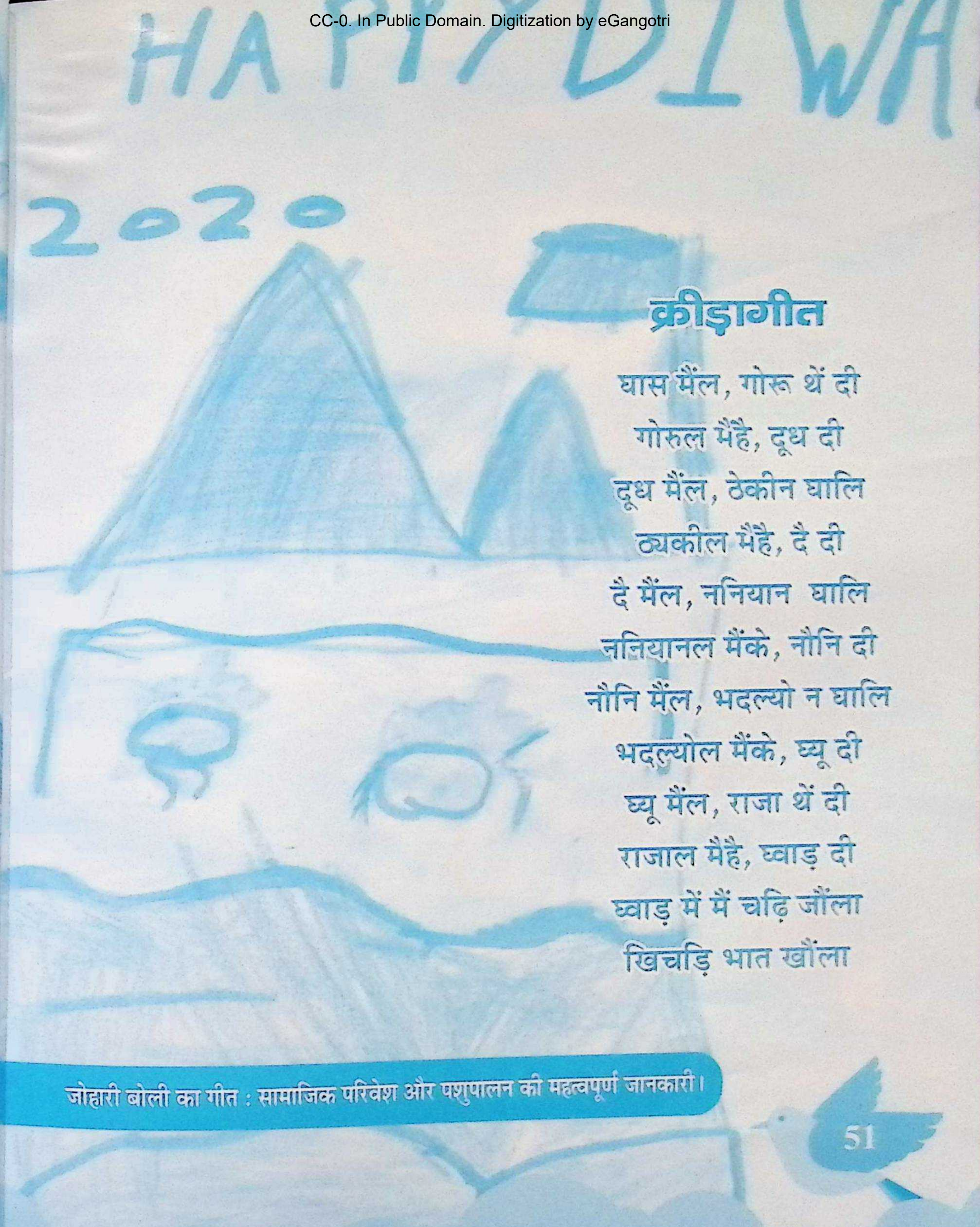

क्रीड़ागीत

घास मैंल, गोरू थें दी
गोरुल मैहै, दूध दी
दूध मैंल, ठेकीन घालि
ठ्यकील मैहै, दै दी
दै मैंल, ननियान घालि
ननियानल मैंके, नौनि दी
नौनि मैंल, भदल्यो न घालि
भदल्योल मैंके, घ्यू दी
घ्यू मैंल, राजा थें दी
राजाल मैहै, घ्वाड़ दी
घ्वाड़ में मैं चढ़ि जौंला
खिचड़ि भात खौंला

जोहारी बोली का गीत : सामाजिक परिवेश और पशुपालन की महत्वपूर्ण जानकारी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

पारि पातल मामि भेटि
मामि हाथ तामि छी
तामि भरि चूख छी
चूख धैं चाटूँ, मामि धैं भेटूं

जोहारी बोली का बाल गीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

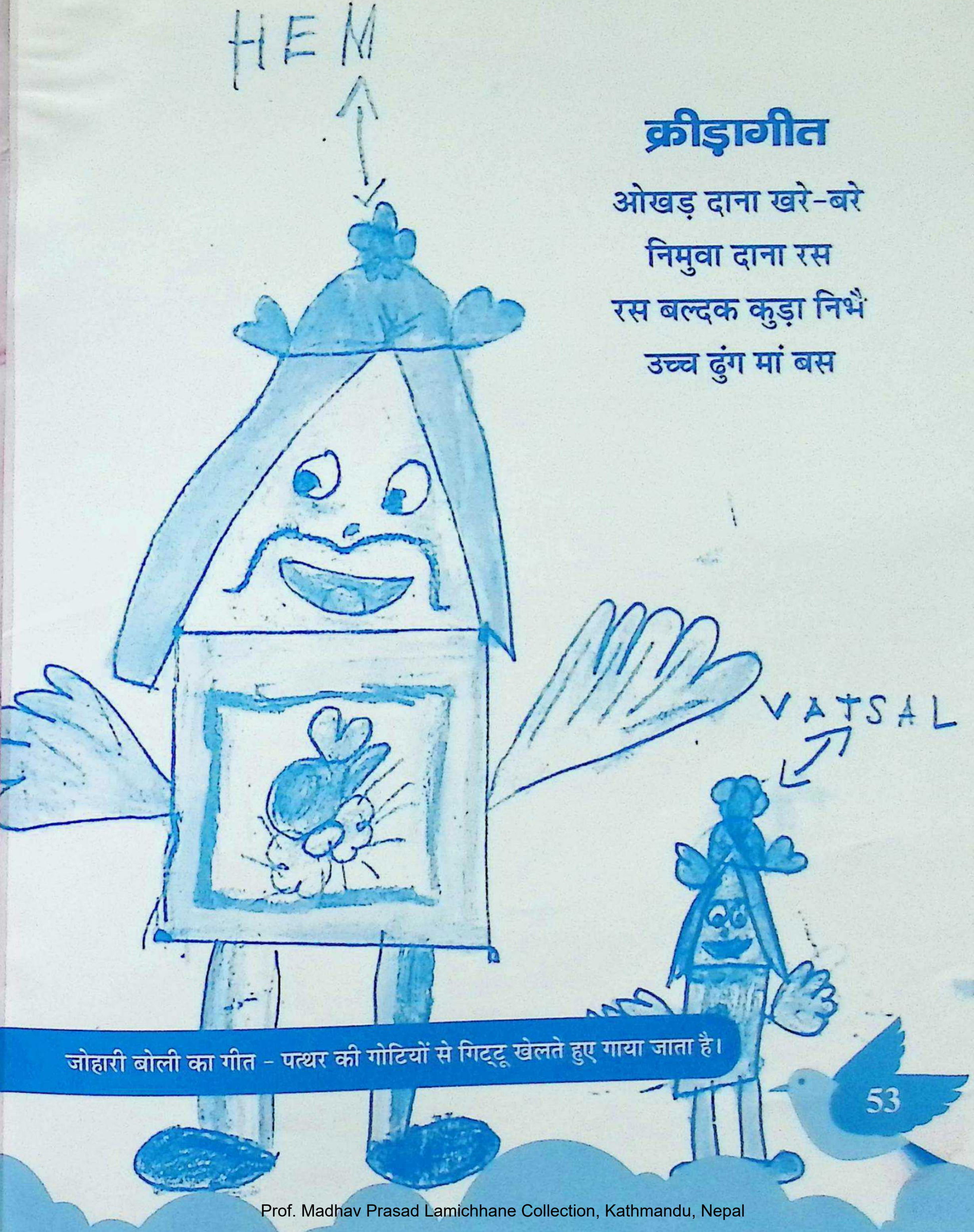

क्रीड़ागीत

ओखड़ दाना खरे-बरे
निमुवा दाना रस
रस बल्दक कुड़ा निभै
उच्च ढुंग मां बस

जोहारी बोली का गीत - पत्थर की गोटियों से गिट्टू खेलते हुए गाया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीड़ागीत

बाड़ो-बाड़ो, धरती छाड़ो।
श्याव कै बुद, स्यू को पराण।
बाड़ो-बाड़ो, धरती छाड़ो।
धरती बराबर चौड़, अगाश बराबर लामों।
बाड़ो-बाड़ो, धरती छाड़ो।
ब्यल जै फलिये, दुब जै पनपिये।
बाड़ो-बाड़ो, धरती छाड़ो।
लाख बरस उमर है जो, छै च्याल नौ नाति है जैं।
बाड़ो-बाड़ो, धरती छाड़ो।

शिशुओं को नहलाते समय बहलाने के लिए यह गीत गाया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

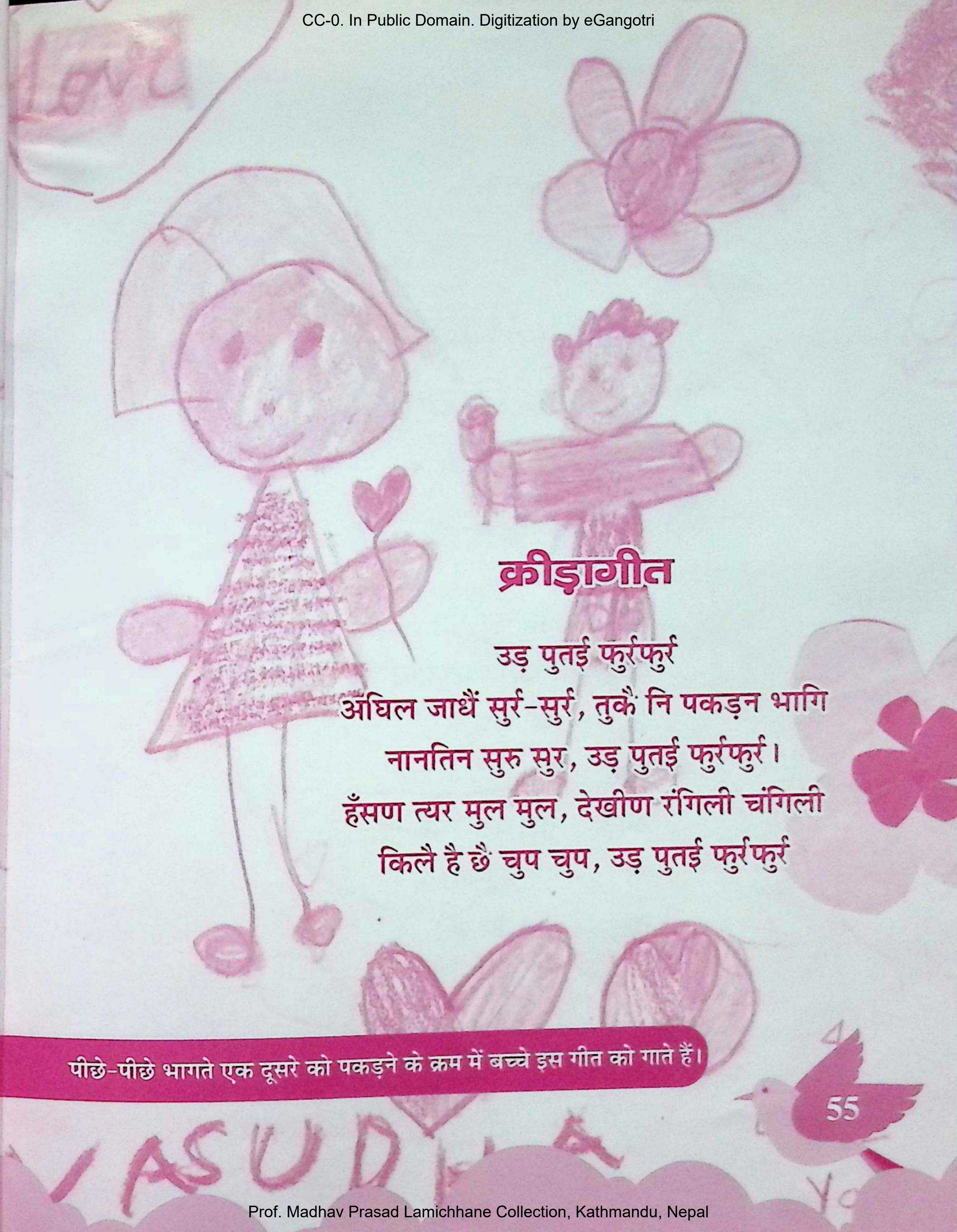

क्रीड़ागीत

उड़ पुतई फुर्रफुर्र
अँघिल जाधैं सुर्र-सुर्र, तुकैं नि पकड़न भागि
नानतिन सुरु सुर, उड़ पुतई फुर्रफुर्र।
हँसण त्यर मुल मुल, देखीण रंगिली चंगिली
किलै है छैं चुप चुप, उड़ पुतई फुर्रफुर्र

पीछे-पीछे भागते एक दूसरे को पकड़ने के क्रम में बच्चे इस गीत को गाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

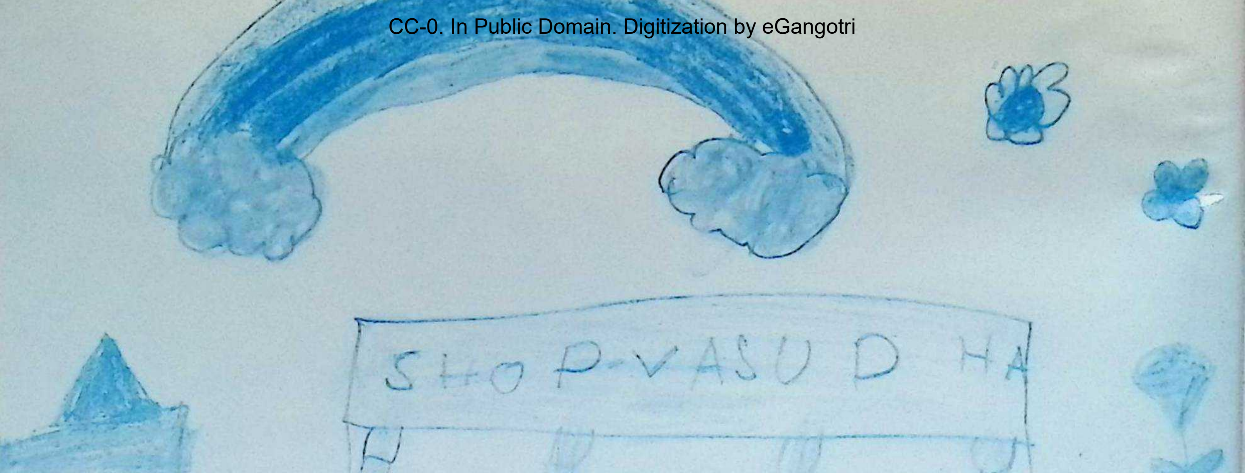

पढ़ाई लिखाई

एक – म्यारा खुट्टा सेक

द्वी – से पाणी पी

तीन – गोर हर्चिगीन

चार – अब चल घार

पाँच – अब पे ब्यटा छांछ

छै – ल्यो बुबा दै

सात – पकड़ म्यारू हाथ

आठ – चल बटा–बाट

नौ – पकड़ म्यारा पौ

दस – अब कैर बस

बच्चों को गिनती सिखाने का रोचक तरीका।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पढ़ाई लिखाई

कंदनु का
बाईमति कि
देणैं की
उड़तालु कु
बडेरे कू
एक लग के
दो लग कै
लपन्या को
दुपन्या कौ
स बिन्दु कं
द्वासरु बिन्दु कः

बारहखड़ी लिखने की सरल विधि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

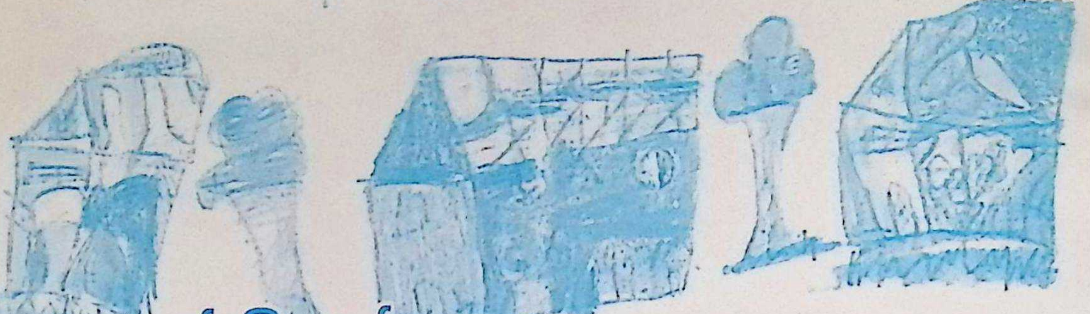

पढ़ाई-लिखाई

एक बजे इकतारा
दो बजे द्वारिकानाथ
तीन बजे त्रिलोकीनाथ
चार बजे तो चारधाम
पांच बजे परमेश्वर-नाम
छे बजे छबीले श्याम
सात बजे सुंदर नाम
आठ बजे आठों श्याम
नौ बजे नमो नारायण
दस बजे दामोदर नाम

अंकों के साथ बच्चों का पहला परिचय।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

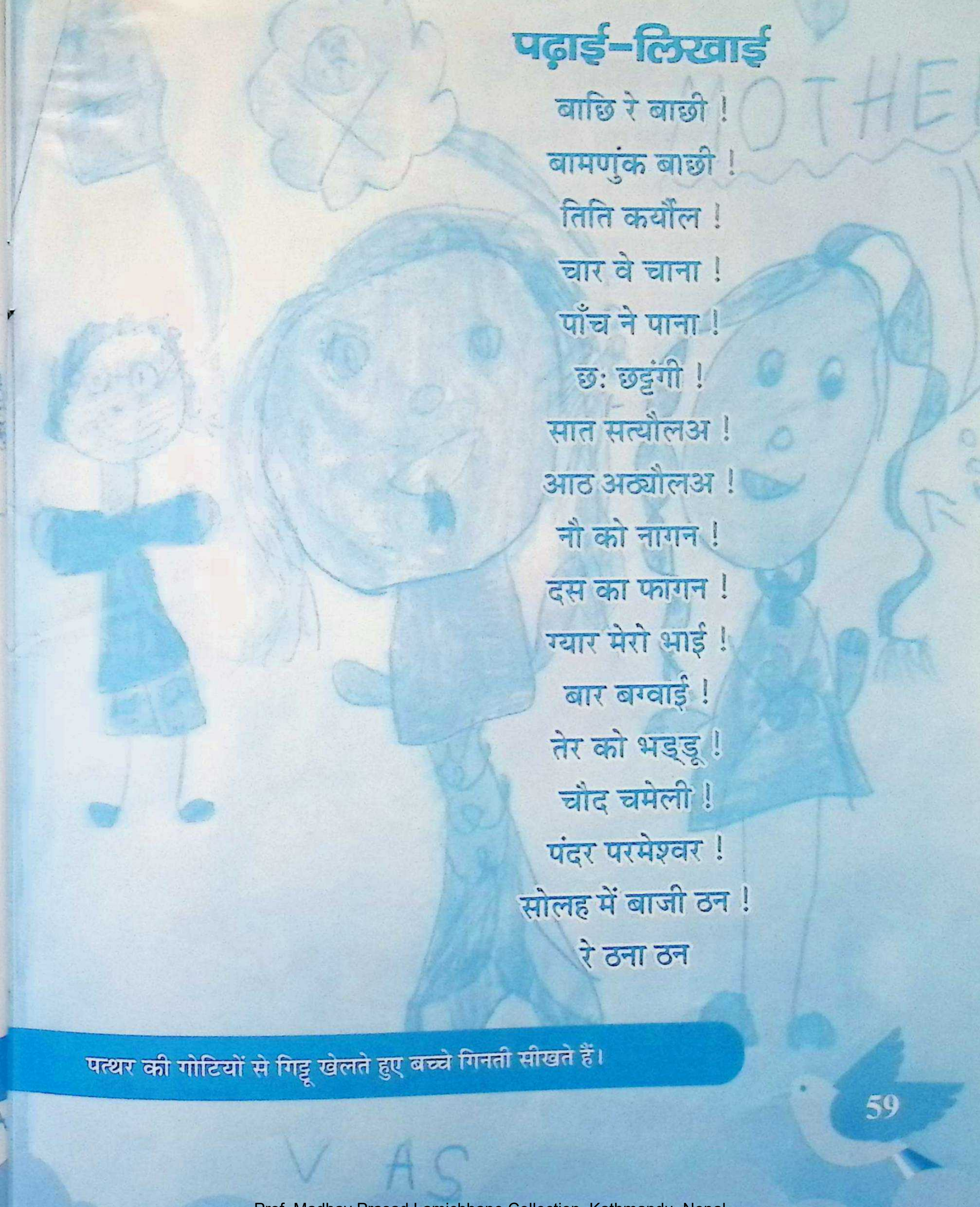

पढ़ाई–लिखाई

बाछि रे बाछी !
बामणुंक बाछी !
तिति कयौंल !
चार वे चाना !
पाँच ने पाना !
छः छट्टंगी !
सात सत्यौलअ !
आठ अठ्यौलअ !
नौ को नागन !
दस का फागन !
ग्यार मेरो भाई !
बार बग्वाई !
तेर को भड्डू !
चौद चमेली !
पंदर परमेश्वर !
सोलह में बाजी ठन !
रे ठना ठन

पत्थर की गोटियों से गिट्टू खेलते हुए बच्चे गिनती सीखते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पढ़ाई–लिखाई

अ आ बच्चि का
इ ई बचुलि दी
उ ऊ परिया बू
ए ऐ माटाकि डई
ओ औ गुड़ौक डऊ
अं अः स्कूलक थें जल्दि औ

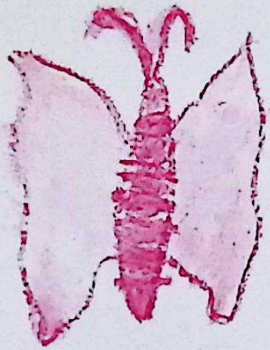

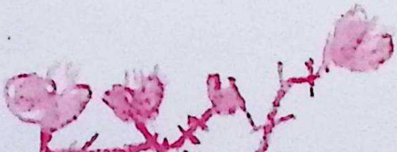

बच्चों को अक्षरों से परिचित कराने का गीत।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पढ़ाई-लिखाई

तितुर चाखुड़, मुस-भ्याकुड़, पिरौड़ी-घिनौड़ी
म्यार मुलुक चार करनि, उड़नी दौड़ी-दौड़ी
गड़मौलिया, लम्पुछड़ि, टिपराई, करौल
जोड़ी में घुघुत बासनि, दांग में सिरौल

रचनाकार : बालम सिंह जनौटी

विभिन्न पक्षियों के नाम ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आशीर्वचन

जी रये जागि रये, यौ दिन यौ मास भेटने रये
धरती जस चकव है जाये, आकाश जस उच्च है जाये
दुबौक जस जौड़ है जौ, पातिक जस पौव है जौ
सूरजक जस तराण है जौ, स्यावैकि जसि बुद्धि है जौ
सिल पिसी भात खाये, जाँठि टेकि झाड़ जाये

दुतिया - हरेला एवं अन्य पर्वों पर घर के बड़े लोगों द्वारा बच्चों को सुख-समृद्धि और दीर्घजीवी होने के आशीर्वचन इन शब्दों के साथ दिए जाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहेलियां (आंणा-भ्वीणा)

1. बत्तीस भै कुटदारा, यो नौनी स्वेरदारी।
2. काळी मुण्डी, धिमकि आग, मन्न बचण, अपना भाग।
3. मंड मा म्यारो छारु च, इन च बुल्यां जोगि च, पेट मेरो गगड़ान्दु च, इन च बुल्यां रोगि च।
4. बुतत, बातत जामत जू, काटत फाटत फाटत फू, कूटत कूटत फूँकत फू, भड़कत भड़कत भड़कम भू, मार सड़ाबड़ सपड़म सू।
5. काली कलचुण्डी छौं, डाला मथि रौन्दु छौं, स्वाद मेरु खट्‌टू मिट्‌ठू, गोल गोल गिन्दु छौं।
6. बिना खुट्‌यूकि जान्द सात समुन्दर पार, बिना गिच्चिक ब्वल्दि छ, ठीक तेरो घरबार।
7. अलंगे रानि पलंग बिछा, सुरज आयो झपके लीजा।
8. टनटन तबलंग दुनिया में खबर नि, एक फल मैं ल पायो, उठिल ने गुठिल।
9. छ्यां कर म्यां कर, मि नि त क्या कर।
10. तू मेरि टोपि खाले, मैं तैरि लोति खूंल।
11. हिटण में सुस्त, देखण में काव, चौमास में देखिंछ, खांण में छाव।
12. औंणैल खाय, पौंणैल खाय, कम्मु डेल बकाय रय।
13. स्यौलि सिकोड़ टोड़ि नै सकिन, झल्लू बल्द बै नै सकिन।
14. अघिल सुकिल, पछिल बे मैल

उत्तर

1. जीभ
2. बंदूक
3. हुक्का
4. कड़ी/छिछड़ा
5. किरमोड़ा
6. चिट्‌ठी
7. पाला
8. ओले
9. नमक
10. हिसालू
11. जोंक
12. आम और गुठली
13. सांप और बाघ
14. मूसल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुमाउनी कहावतें (एना-बातें)

1. अधैण बामणकि भैंसेंन खीर।
2. ब्वारिक लच्छण मैत बटि।
3. काण कन्यायी डनो अन्यायी।
4. भूत पूजौ, भूतणि लागि।
5. स्यापक च्योल पेटै बटि कुरबुरैल।
6. बाबाकि कमै न सपूतै खां न कपूतै।
7. जै घर नानतिन उवीक घर कौतिक।
8. स्वार निरवाण दि या खोर।
9. म्यार याँ आलै, के ल्याले ? त्यार यां ऊँलो, के देलै ?
10. च्यल सुदरौ बबाक हात, चेलि सुदरौ मै का हात।
11. ख्वार मिठया नै ढिग पिण्या।
12. निमड़ि गौंक घिनौड़ पधान।
13. जां जां रघु पौण, वां निरौ कुटि कौण।
14. सत मंगली कौतिक ग्यो, कौतिकै निमै।
15. सिल ध्वे, पिंगल साग।
16. छां कूँ जाण, टिटर लुकुण।
17. गहत खाइयें जसि मचैनि।
18. जैक मुख चलौ, वीक नौ हलाक बन्द चलौ।
19. कां राजैकि राणि, कां भगतुवैकि काणि।
20. लाट कैं सीप सिकाई, सिखनै ग्यो।

श्री गोपाल दत्त पंत, ढनौली, बेरीनाग, पिथौरागढ़

कुमाऊँ के ग्रामीण अंचल में बात- बात पर प्रयोग होने वाली कहावतें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

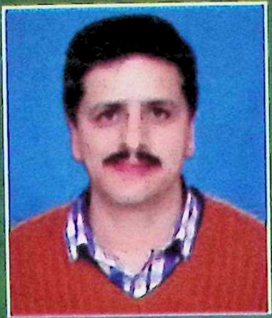

हेम पन्त

जन्म स्थान : ग्राम-भड़कटिया (पिथौरागढ़)
माता-पिता : श्रीमती तारा देवी व श्री गोविंद प्रसाद पन्त
वर्तमान : रुद्रपुर में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में मैनेजर

रचनात्मक सक्रियता :

- 'क्रिएटिव उत्तराखण्ड' संस्था के संस्थापक सदस्य।
- उत्तराखण्ड के प्रमुख ऑनलाइन पोर्टल merapahad.com में सक्रियता।
- 'शैलनट' संस्था के माध्यम से रंगमंचीय जुड़ाव।
- तकनीक के माध्यम से उत्तराखण्ड की लोकसंस्कृति व स्थानीय भाषाओं के संरक्षण संवर्धन में संलग्न।
- चर्चित ऑनलाइन कार्यक्रम 'म्योर पहाड़, मेरि पछ्यांण' का संयोजन।
- 'घुघूति बासूति' उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीत का संकलन।

संपर्क : hempantt@gmail.com / 9720454001

हमारा लोक मा प्रचलित बालगीतों को संकलन करी भुला हेम पन्तन ननतिनो कि सुध लेइ बधै। हमारा पुराना लेख्वार त बच्चों का वास्ता काफि कुछ लेखी गेनी पर नया लेख्वार भौत कम लेखणा छिन। हम हेम से उम्मीद करदां कि वो ऐथर भि ननतिनों खुणि नया पुराना लोरी, खेल गीत, बाल कविता, आणा-पखाणों को संग्रह, छालछाट करी हमारा बाल साहित्य तैं ऐथर बढ़ाणो प्रयास करला।

नरेन्द्र सिंह नेगी
लोकगायक।

'घुघूति बासूति' क रूप में हमरि अघिल उनेर पीढ़ी कें भौत बढ़िया भेंट मिलि रेछ। यो किताब हमरि भाष, गीत, समाज कें भविष्याक नानतिनान तक, दूरदराज तक पुजालि। दगड़ में यो सयाननाक मन में ले कुतक्यालि लगालि।

डॉ. उमा भट्ट
भाषाविद् (नैनीताल)

उतराखण्ड क हर्चण मा आण लगें पारंपरिक नन्याणु क गीतु की छुपकी 'घुघूति बासूति' नन्याणु मां आपड़ऽ लोक क संस्कार बऽण मा बंठ्या कारगर हऽण लगीं। नन्याणु क गीत आमार आपड़ऽ थाती अर माटीकई लगाव रखणलै संजीवनी कू काम करौं।

महावीर रवांल्टा
सदस्य, उत्तराखण्ड भाषा संस्थान

समय साक्ष्य
15, फालतू लाइन, देहरादून-248 001
0135 2658894, mailssdun@gmail.com
www.samaysakshay.com

ISBN 978-93-90743-03-2
978-93-90743-03-2
₹ 140/-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal